

॥ श्रीः ॥

खूबचन्दचिकित्सा- (वैद्यकसार)

जिसको

लाला खूबचन्द आनरेरी मजिस्ट्रेट व वायस
चैअरमन पीलीभीत निवासिनि अपने ४०
वर्षके अनुभवमे परीक्षित, तत्काल गुण-
मद औषधियाका समग्रण किया है.

वही

वलदेवप्रसादने

खेमराज-श्रीकृष्णदासके
वम्यई

(सेवारा ७ वीं गली रामबाग लन,)

निज "श्रीविद्वेश्वर" स्टीम-मुद्रणयन्त्रालयम
मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

मसूर १९७३, शक १८९८

इसका मूल प्रकाश 'श्रीविद्वेश्वर' यन्त्रालयम

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने यम्हई खेतघाटी ७ बीं गल्ली खम्बाटालैन
निज "श्रीषेकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया.

भूमिका



“ धर्मोर्ध्वकाममोक्षाणामारोग्यं मूलकारणम् । ” अर्थात् आरोग्यता यानी तन्दुरस्ती ही ससारके चारों पदार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्षको पैदा करनेवाली है, वहीं तन्दुरस्ती बिना औपधियोंके जाने हासिल नहीं होसکتی इसलिये सबसे पहिले औपधिका जानना सबका फर्ज है ताकि तन्दुरस्ती कायम रहे । इसवास्ते सर्वसाधारणके उपकारार्थ श्रीमान् कर्मक्षत्रियवशावतंस लाला मूबचन्दजी आनरेरी मजिस्ट्रेटने अनेक गुणवान् साधु महात्माओंसे और अनेक ऐसे ग्रन्थोंसे जिनका पता भी न था उन सबके द्वारा संग्रह करके तथा ४० धर्मतक रात्रिदिन इसीमें लगाकर जो औपधिया खास उनके इस्तेमालमें और तजबज्जे आई और जिनका काम रात्रिदिन अपने देशमें जियादः पडताहै उनकी शोधन विधि इत्यादि हस्तक्रियासे तजबज्जे करके तरह तरहके रोगोंपर चुन चुन कर औपधिया संग्रह कीं, परन्तु प्रबल ईश्वरकी इच्छा अधीन उनके परमधाम चलेजानेसे उससमय वह ग्रन्थ मुद्रित न होसका ।

इस अनोखे संग्रहत्नसे लोग बञ्चित न रहै यथार्थ लाभ प्राप्त करै और प्रयकर्ताका परिश्रम भी सफल हो यह विचार करके इसे श्रीमान् पण्डित गुमानीलालशर्मा वैद्यजीसे शुद्ध कराके और मुद्रित करके आशा करनाहूँ कि सज्जन महोदय इस अमूल्य संग्रहसे लाभ प्राप्तकर मुझे अनुग्रहका पात्र बनावेंगे ।

कृपाभिलाषी,
बलदेवप्रसादवर्मा.

अथ खूबचन्दचिकित्साविषयानुक्रमणिका ।



विषय.	पृष्ठांश.	विषय.	पृष्ठांश.
अथ इन्द्रज सुत्तरदा ...	१	अथ धौरीगोमरी मम्महरण	
अथ इन्द्रज सौमीका	१	विधि न० २३	२०
अथ संधातुशोधनविधि न० १	१४	अथ सोनेरी मम्महरणविधि न. २४	११
अथ गंधकशोधनविधि न० २	११	अथ मोनेरी मम्महरण दूसरी विधि	
अथ अक्षरकशोधनविधि न० २	११	न० २९	२१
अथ शिगरफशोधनविधि न. ४	१५	अथ चन्द्रोदयकरणविधि न० २६-	१२
अथ गुग्गुलु शोधनविधि न० ५	११	अथ चन्द्रोदयकरण दूसरी विधि	
अथ धातुममकरणविधि न० ६	११	न० २७	२२
अथ शिगरफशोधनविधि न० ७	१६	अथ चन्द्रोदयकरण तीसरी	
अथ हरताडशोधनविधि न० ८	११	विधि न० २८	२३
अथ मनशिखशोधनविधि न० ९	११	अथ रसमानिकविधि न० २९	२४
अथ कुचलाशोधनविधि न० १०	११	अथ रसमानिक दूसरी विधि न. ३०	२५
अथ फिटफराशोधनविधि न० ११	११	अथ रसमानिक तीसरी विधि न. ३१	२१
अथ मीटोपेटियाशोधनविधि		अथ रससिन्दूरविधि न० ३२	२७
न० १२ ...	१७	अथ हरताडकी विधि न० ३३	११
अथ धनुःशोधनविधि न० १३	११	अथ हरताडकी दूसरी विधि न० ३४	२८
अथ मोनामकर्माशोधनविधि न० १४	११	अथ सगियाकी विधि न० ३५	२९
अथ जमालगोटाशोधनविधि न० १५	११	अथ शिगरफकी विधि न० ३६	३०
अथ भिगवाशोधनविधि न० १६	१८	अथ शिगरफ मंत्रकभालेकी	
अथ पाराशोधनविधि न० १७	११	विधि न० ३७ ...	३१
अथ रौंगशोधनविधि न० १८	१९	अथ शिगरफसंस्कारविधि न. ३८	३२
अथ शीशुशोधनविधि न० १९	११	अथ शिगरफकी विधि न० ३९	११
अथ कैचदीजीशोधनविधि न० २०	११	अथ शिगरफकी विधि न० ४०	३३
अथ धातुओंकी विधि न० २१	११	अथ अम्रककी विधि न० ४१	३४
अथ चार्दीसी मम्महरणविधि न० २२	११	अथ अम्रकस्मायन न० ४२	३५

विषय.	पृष्ठांक.	विषय	पृष्ठांक.
अथ अन्नक की दूसरी विधि नं० ४३ ३९		अथ शोरा कुस्ता न० ६९ .	११
अथ सहस्रपुटी अन्नक मारण-		अथ सग्रहणीकपाटरस न० ६६ ५३	
विधि न० ४४ ३६		अथ क्षुधासागर न० ६७	११
अथ तांबामारणविधि न० ४५ ३८		अथ रसकपूरकी विधि न० ६८ ५४	
अथ शीशे (नागरस) की पहिली		अथ सोनामक्खीशोधनविधि न० ६९-७०	
विधि न० ४६ ३९		अथ सोनामक्खी मारण विधि न० ७० ११	
अथ शीशेकी क्रिया न० ४७	११	अथ मूत्रकृच्छ्र न० ७१ ११	
अथ कुस्ता रागका न० ४८ ४०		अथ यक्ष्मपावनानेकी क्रिया न० ७२ ५६	
अथ रागखीलनालेकी क्रिया न० ४९-४१		अथ भूधरयत्र न० ७३ ... ११	
अथ रागशोधनविधि न० ५० ४२		अथ शीशामारणविधि न० ७४ ११	
कुमुदेधररस न० ५१ ४३		अथ मृतसजीविनी वटी रस सन्नि-	
अथ सार (लोहा) की पहिली		पातपर न० ७५ ५७	
विधि न० ५० ४४		अथ पारा मारण न० ७६ .. ११	
अथ सारकी दूसरी विधि न० ५१ ११		अथ पाराशोधनविधि वैद्यदर्पणकी	
अथ सारकी तीसरी विधि न० ५२ ११		रतिसे न० ७७ ५८	
अथ सारकी चौथी विधि न० ५३ ११		चन्द्रप्रभा गूगल वैद्यदर्पणके मत-	
अथ मण्डूरवनानेकी क्रिया न० ५६ ४६		से न० ७८ ६०	
अथ नैगेके कुस्ताकी विधि न० ५७ ४७		शिगरफ न० ७९ ६२	
अथ मोतीके कुस्ताकी विधि न० ५८ ११		दमा चन्द्रोदय न० ८० ११	
अथ हीरा व चुन्नीमारणविधि न० ५९ ११		अथ कुमारआसत्र (वैद्यदर्पणका)	
अथ लक्ष्मीत्रिलास रस न० ६० ४९		न० ८१ ६४	
अथ कुस्तासैर्गई सब न० ६१ ५०		अथ द्राक्षादिआसत्र न० ८२ ६६	
अथ कपूररस भीमसेनी न० ६२ ११		अथ लघुविपगर्मवैल न० ८३ ६७	
अथ मृगाककी विधि न० ६३ ५१		अथ अर्कजैभीरी न० ८४ ६९	
अथ नागरस हकीम दूर्गाप्रसाद		अथ गोली शूलगजकेसरों न० ८५ ७०	
शाला न० ६४ ५२		गोली ग्यासीकी न० ८६ ७१	

विषय	प्रष्ठांक.	विषय	पृष्ठांक.
गोली दामाद न० ८७ ७१		दवाई न० ११० ९१	
गोली अर्जीर्णानार न० ८८.... ७२		अथ जिगरी हरात और भूखकी	
दवाई दादकी न० ८९ ७३		दवाई न० १११ "	
अथ पीपलपाग न० ९० "		अथ धातुगिरनेकी दवाई न. ११२ "	
अथ दवाई फाल्जिकी न० ९१ ७५		अथ लवणमास्करचूर्ण न० ११३ ९२	
अथ सीतभन्जी रस न० ९२ ७६		अथ हृचकीकी दवाई न० ११४ "	
अथ गिल्टवैटजानेकी दवाई न. ९३ ७७		अथ विडगादि चूर्ण न० ११५ ९३	
अथ एलादिचटनी न ९४ ७८		अथ लेप पंठके दर्दका न० ११६ "	
अथ धातुपुष्टिकी दवाई न० ९५ "		अथ अंग्रेजी दवा कालेजेके दर्द-	
अथ सुजाकफी दवा न० ९६ ७९		यो न० ११७ ".... "	
अथ घटनीसितापलादि न० ९७ "		अथदिमाककेरेजशकीदवाईन ११८ ९४	
अथ मायादिमोदक न० ९८ ८०		अथ हृचकीकी दवाई न. ११९ "	
अथ शिगारअन्नका न० ९९ ८१		तथा हृचकीकी पिजानेकी दवा	
अथ मूसलीपाक न० १०० ८२		न० १२० ९५ -	
अथ देहके विगडनेमें चौध-		अथ चन्दनअयलेह न० १२१ "	
घनी न० १०१ ८४		अथ अजन आँखके जाले तथा	
अथ आदमीके सुस्तीकी दवाई		धुन्धका न० १२२ " "	
न १०२ ८६		अथ बच्चोंके पसली चलनेकी	
अथ बहुत पेशाब आनेकी		दवा न० १२३.... .. ९६	
दवाई न० १०३ ... ८७		अथ अर्क जामन न० १२४ "	
अथ बयासीरकी दवाई न० १०४ "		अथ दातके दर्दकी दवाई न० १२५ "	
अथ इकीकी दवाई न० १०५ ८८		अथ पेचिशकी दवाई न० १२६ ९७	
अथ विजयचूर्ण कब्जपर न० १०६ "		अथ तम्बाकूका नुसखा न० १२७ ९८	
अथ आतशकफी दवाई न० १०७ ८९		अथ कत्थाका नुसखा न० १२८ "	
अथ सुस्तीकी दवाई न० १०८ "		अथ पेटके दर्दकी दवाई न. १२९ ९९ -	
अथ तालीशादि चूर्ण न० १०९ ९०		अथ खांसीकी दवाई बच्चोंकी	
अथ हाजमे और पंठके दर्दकी		न० १३० १००	

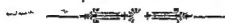
विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
अथ सांप काटेकी दवाई न. १३१-१००		दवाई न० १४८ ... १०८ -	
अथ खींके गर्म रहनेकी दवाई		अथ गलित कोठकी दवाई न. १४९" ✓	
न० १३२ "		अथ सफेद दागकी दवाई न० १५०" ✓	
अथ दमा व खांसी व भानु पतली		अथ बिच्छूके काटनेकी दवाई	
व सुस्तीकी दवाई न० १३२-१०१		न०: १५१ "	
अथ कृयते पाह व प्रमेहकी		अथ चूर्णहाजमेका न० १५२ "	
दवाई न० १३४ "		अथ धुंटी बर्बोकी न० १५३ १०९	
अथ मुजाफकी दवाई न० १३५ १०२		अथ चूर्ण हाजमेका दूसरा न० १५४"	
अथ प्रमेहकी दवाई न० १३६ "		अथ टवा दर्द नया हाजमेकी	
अथ आतशरुकी दवाई न० १३७ "		न० १५५ ११०	
अथ बगसीर मूनी वा चादी कै-		अथ गिट्टी तथा पेटके दर्दकी	
मीनी हो दवाई न० १३८ १०३		दवा न० १५६ "	
अथ गठिया व दर्दकी दवाई न. १३९"		अथ हेंजकी दवाई न० १५७ १११	
अथ गर्बन पेशाब ज्यादा आ-		अथ औरतके खून बन्द करनेकी	
नेका न० १४० १०४		दवा न० १५८ "	
अथ फर्की पेशाब ज्यादा आने-		अथ आंग दुखनेकी दवा न० १५९ "	
की न० १४१ "		अथ प्रदररोगकी दवा न. १६० ११२	
अथ अर्क फर्की के माथका न. १४२ "		अथ वायशूलदर्दकी दवा न० १६१"	
अथ नामदीकी दवाई न० १४३ १०५		अथ फोडा बिटानेकी दवा न० १६२"	
अथ गुमरायन जुकाम पर		अथ पुराने ज्वर पर लेन न० १६३ "	
न० १४४ १०६		अथ गोन्टा जाड बुखारकी न. १६४"	
अथ छावरका पी न० १४५ "		अथ दन्तोंकी दवा न० १६५ ११३	
अथ मुम्मीकी दवाई न० १४६ १०७		अथ हाजमेकी दवा न० १६६ "	
अथ जहर विष व मौय व अर्ज-		अथ बच्चकी दवा न० १६७ "	
गरी दवाई न० १४७ "		अथ लेन व विष्मके दर्दका	
रूप हर विषक जहर रानेकी		न० १६८ ११४	

विषय.	पृष्ठांक	विषय.	पृष्ठांक,
अथ आंखसे पानी गिरनेकी दवा न० १६९ "		अथ सडाई शीशेकी आँवमें लगा- नेकी न० १८२ "	
अथ नासूरकी दवा न० १७० ११५		अथ लीक्स पिस्ता बनानकी विधि न० १८३ १२२	
अथ दवाकुष्ठकी न० १७१ "		अथ आसव द्राक्षादि दूसरा न० १८४ १२३	
अथ शिरके दर्द और पीनसकी दवा न० १७२ "		अथ दृष्टकी दवाई न० १८५ १२५	
अथ रोगन फाफूरकी विधि न० १७३ ... ११६		अथ नारायणी तेल न० १८६ "	
अथ बच्चोंके पसलीकी दवा न० १७४ ११७		अथ लोहा आसव न० १८७ १२६	
अथ दमाकी दवा न० १७५ "		अथ अरुं बेल न० १८८ "	
अथ सुस्तीकी दवा न० १७६ ११८		अथ शर्गत बेल न० १८९ १२७	
अथ योगराजगूल घायपर न. १७७ "		अथ धातुपुष्टि व ताफतकी दवा न० १९० १.... "	
अथ योगराजगूल दूसरा न० १७८ ११९		अथ अजन आंखके जाल धुव फलीका न. १९१ "	
अथ शिगरफवातरोगपर न. १७९ १२०		अथ बच्चोंकी सप्रहणी तथा बुखा- रकी दवाई न० १९२ १२८	
अथ गोली सजीवनी न० १८० "			
अथ सुरमा आखका न० १८१ १२१			

॥ श्रीः ॥

अथ

खूबचन्दचिकित्सा प्रारम्भ ।



मंगलाचरण ।

सुमिरि भवानी शङ्करहिं, हिय धारि चरणसनेहु ।

संग्रह औपधिको कही, गणनायक वर देहु ॥ १ ॥

जासु नाम भव औपधी, हरण घोर त्रय शूल ।

सो रघुनन्दन अवधपति, सदा रहैं अनुकूल ॥ २ ॥

नवनीरदसम श्याम, दयाधाम नीरजनयन ।

बसहु सदा श्रीराम, मेरे हिय सुखमा अयन ॥ ३ ॥

इलाज बुखारका नं० १

जो बुखार जाड़ा देकर आता हो और उसमे खाँसी और कफ भी हो तो पहिले ४ चार रोज तक शिलार्जीत, लौंग, सुख इलायची देना चाहिये उसके बाद जूफाब-हेडा, विसौटा, गिलोय सब चीज छेछे मासे ६ का काढा निमक डालकर पिलाना चाहिये, अगर खुश्की ज्यादा करै तो बजाय निमकके शहत डालकर पिलाना चाहिये, इससेभी बुखार न जाय तो एक रत्ती सारमनसलवाला, मुनक्केमें रखकर एक घंटे पहिले खिलाना चाहिये इससे

भी नफा न होतो एक रत्ती १ मूंगेका कुस्ता और १ एक रत्ती अबरख दोनों मिलाकर पानमें रखकर खिलाना चाहिये और अगर सर्दीका जोर ज्यादा होतो रससिंदूर तथा रसमानिक तथा चंद्रोदय पान तथा अदरकके अर्कमें एक रत्ती दे और अगर दवाकी गरमी कम करना मंजूर हो तो वंशलोचन सफेद इलायची शहत तथा शरबत अनारमें मिलाकर खिलावे और अगर ताकत देनेकी जरूरत हो तब चांदीके बर्क, मोतीसत, गिलोय और मिलाना चाहिये अगर दाह होतो अंडके पत्ते पिंडोरका चौका लगाकर उसपर रखकर छातीपर रखवै तथा कपूर, सफेदचंदनका फाया बनाकर कौड़ीपर थोड़ी देर रखवै ।

नं० २. जो शिंगरफ अदरकके रसमें बनाया गया है तो खाँसी, बुखार, जाड़ेको पानपर तथा तुलसीके पत्तेपर तथा शहदमें खिलानेसे दूर करता है इसमें मूंगेका कुस्ता भी मिलाकर दिया जाता है ।

नं० ३. सार, मनसलबाला फक्त मुनक्का और तुलसीके पत्तेमें खिलानेसे आराम होजाता है ।

नं० ४. गोली जिसमें कपूर, काली मिर्च, करेलेके पत्ते शामिल हैं जाड़ा बुखारको फौरन दूर करती है। नं० ५. पुराना अबरख ज्यादा फायदा करता है और अगर बुखा

रको खाँसी, कफ भीशामिल हो तब एक १ चावल पीपल ६४ चौंसठ पहरकी घुटी हुई मिलाकर खिलाना चाहिये।

नं० ६. बुखार, तिजारी, चौथिया जो ज्यादा रोजका हो उसको २ चावल हरतालका कुस्ता बगैर मीठे कच्चे दूधके साथ देना चाहिये उस रोज सिवाय दूधके और कुछ गिजा नहीं देना चाहिये ।

नं० ७. बुखारको १२ वारह रोज होगये हों और पेटमें मल मालूम हो तब जुल्लाव देना चाहिये, अगर वायु और कफका दोष ज्यादा हो तब लंघन कराना चाहिये, लंघनकी हालतमें दवा कम देना चाहिये ।

नं० ८. अगर कफकी ज्यादाती न हो कुछ वायु शामिल हो तब जूफा, बहेडा, विसौट, गिलोयके काढेकी जरूरत नहीं है शिलाजीतवाला काढा लौंग त्यागकर देना चाहिये, सार, मनसलवाला मुनक्केमें अवरख शहतमें देना चाहिये, अगर खुशकी ज्यादा हो तो उशीरादि काढा देना चाहिये और कासनीके पत्ते ७ पानीमें पीसकर फाड़ले, उसमें शहद तथा मिसरी तथा शरबत अनार तथा शरबत नीलोफर इसमें जो मुनासिब जाने डालकर मनसलवालासार १ एक रत्ती देना चाहिये दाह ज्यादा हो और बुखार चढा हो उस वक्त, १ एक रत्ती कुमुदेश्वर, रसमिसरी और काली मिर्च मिलाकर

शहद या शरबत अनार या शरबत नीलोफरमें देना चाहिये नागरस नं० ६४ मिस्ल कुमुदेश्वर देना चाहिये ।

नं० ९. और जिन लोगोंको बदनफेली ज्यादा करनेसे वीर्य नहीं रहता और बुखारमें बीमार हों उनमेंसे किसी किसीको ऐसा होता है खुश्की ज्यादा होती है बार बार गस आता है ताकत नहीं रहती, ऐसा ख्याल होता है कि आखिरी वक्त है उस वक्त फौरन एक रत्ती मोती, एक वर्क चाँदी, एक रत्ती वंशलोचन एक सफेद इलायची, एक रत्ती सतगिलोय, एक रत्ती कुस्ता राँग, एक रत्ती सार मनसलवाला शहद या शरबत अनारमें मिला कर फौरन खिलावे इसके खिलातेही १५ पन्द्रह मिनटमें आराम होगा अगर देर कीजावैगी तो वचना मुश्किल है।

नं० १० जो सन्निपात हो तो गोली संजीवनी नं० ७५ पकी अदरकके रसमें देना चाहिये तथा रस सिंदूर तथा रसमानिक तथा चन्द्रोदय अनुपान उसवक्त जैसा मुनासिब समझे उसमें दे और जो पसीना ज्यादा हो और जिस्म ठंडा हो और साँसका वेग हो उसको चन्द्रोदय नं० २८ का अदरकके रसमें देना चाहिये फौरन फायदा होगा ।

नं० ११, पुराने बुखार और खाँसीमें थ्रींगार अवरख, व रसमानिक व कुस्ता चुन्नी एक रत्ती अनुपान मोतदिलके साथ देना चाहिये लेकिन कुछ दिन खाना

चाहिये घी, दूधका परहेज नहीहै लेकिन दूध क्षीरपाक होना चाहिये और मकान तथा कपड़े बीमारके स्वच्छ रखना चाहिये ।

नं० १२. और सिर्फ बुखारमें हिरनके सींगकी भस्म २ दो रत्ती शहदमें मिलाकर देना चाहिये आराम हो जावेगा ।

नं० १३. पित्त अधिक बुखारमें पिलास ज्यादा हो १ एक सेर पानी जोश करै जब तीन पाव रहे उसमें एक तोला सत कागजी, डेढ़ छटाक मिसरी डालकर उतार ले और मिट्टीके बरतनमें रख ले ठंडा होनेपर थोड़ा थोड़ा पिलाना चाहिये प्यास बंद होजावैगी ।

नं० १४. कफ वातमें पिलास ज्यादा हो तब एक सेर पानीमें २५लौंग डालकर जोश करै जब तीनपाव पानी रहि जावै तब उतारकर वो पानी पिलाना चाहिये तथा पावभर पीपलका पपड़ा पानीमें धुझाकर वो पानी पिलाना चाहिये अगर शर्दीसे दाह और पिलास अंदर ज्यादा हो तब चार मासे लौंगका काढ़ा करके पिला देय ।

इलाज खॉसीका नं० १.

सुश्क खॉसीमें नागरस नं० ६४दो रत्ती लौकसपिस्तामें खिलाना चाहिये अनारका छुकला चारमासे, मुरेठी,

दो मासे, बेहड़ा दो मासे इनका काढ़ा करके मिसरी डालकर पिलाना चाहिये, किसीवक्त बहुत ज्यादा हो तो जवाखार शहद मिलाकर खिलावै कफ निकल जावेगा, इन सबसे न आराम होतो मिसरी, काली, मिर्च डालकर कुमेदेश्वर रस शहदमें खिलावै ।

नं० २. कफकृत खाँसीमें शिंगरफ, अदरकवाला, नं० ३६ आधरत्ती पानपर रखकर खिलावै तथा अभ्रक और मूंगेकी भस्म आधी आधीरत्ती मिलाकर पानपर रखकर खिलावै तथा बहेड़ा अनारका छुकला जलाकर थोड़ी २ देरमें खिलावै ॥

नं० ३. तथागोली खाँसी नं० ६ मुँहमें डाले रहै खाँसी जाती रहेगी तथा श्रींगार अवरख तथा रसमानिक तथा सार तथा पीपल ६४ पहरकी शहदमें खिलाना चाहिये तथा आककी जड़का कोयला नं० १३३-२ चावल मलाईमें रखकर खिलावै मलाई बगैर मीठेकी, अगर खुश्की करै तो दूध बगैर मीठेका पिलावै तथा आसव द्राक्षादि पिलावै इसके पिलानेसे खाँसी बिलकुल जाती रहेगी ।

नं० ४. बच्चोंके बुखारकी दवा खूपकला एक पौटलीमें बाँधकर शामको कुयेके अन्दर लटका दे पीनीमें डूबी रहे सवेरेको निकालकर झाईमें सुखा ले, उसमेंसे चार

रंती महीन पीसकर शहदमें मिलाकर खिलावै बुखार जाता रहेगा ।

नं० ५. बच्चोंकी खांसीकी दवा अतीस, नागरमोथा काकड़ासिंघी, पीपल, सब दवा बराबर पीसकर और सब दवाके बराबर मिसरी मिला कर एक अनार ऊपरसे काटकर दाने निकालकर खालीकर ले नीचे कपड़मिट्टी कर दे, उसमें सब दवाभरकर बकरीका दूध डालदे, अंगारोंपर रखकर पका ले, उसमेंसे एक एक उंगली चटावै खांसी जाती रहेगी ।

नं० ६. हैजेकी दवा—हैजावालेको अजवायन चार मासे पावभर पानीमें जोश करके जब तीन पैसेभर रहे पिलादे, फिर एक घन्टे बाद इसीको पिलावै कै, दस्त बंद हो जावेंगे तथा रोगनकापूर नं० १७३ दस १० बूँदसे १५ पन्द्रह बून्दतक पानीके साथ पिलावै आध आध घंटेमें जितना आराम हो उतनी दवा कम करना चाहिये तथा गोली छुदासागर, लौंगके काढ़ेके साथ खिलाना चाहिये घन्टे घन्टे भरमें अगर पिलास ज्यादा हो तब २५ लौंग एकसेर पानीमें जोश करे जब तीन पाव पानी रहि जावै तो उतारकर वह पानी पिलाना चाहिये तथा पीपलकी छाल सूखी जलाकर उसको बुझायकर वह पानी पिलाना चाहिये तथा

हैजेमें सन्निपातकी हालत होजावै तब इलाजसन्निपातकी करना चाहिये लेकिन उसके साथ दवा हाजमेकीऔर पेशाब लानेवाली शामिल रखवै और लंघन करा दे हैजेकी बीमारीमें जबतक अच्छीतरह आराम न हो जावै तबतक खानेको नहीं देना चाहिये ।

नं० ७. पेटके दर्दकी दवा पेटके दर्दवालेको गोली शूलगजकेसरी गरम पानीके साथ खिलाना चाहिये तथा कुमारासव, नकछिकनीका खोर मिलाकर पिलाना चाहिये अगर पेशाब लानेकी जहूरत हो तब जवाखार या मूलीका खार कुमारासवमें मिलाकर पिलाना चाहिये ये खुराक कुमारासव छे मासेसे दो तोलेतक खुराक खार चाररत्तीसे दो मासेतक तथा अर्क जंभीरी तथा अर्क जामन तथा मुकत्तर जामन यह भी ६ छे मासेसे दो तोले तक दर्दमें पिलाना चाहिये तथा रोगनकाफूर नं० २७३, १५ बूंद तक पानीके साथ पिलाना चाहिये तथा खार नं० गरम पानीके साथ कमदर्दकी हालतमें खिलाना चाहिये तथा रोगन नं० १६८ मालिसकरना चाहिये और इनसेभी सेहत न हो तो दस्त कराना चाहिये और छाती पर दर्द हो जिसको हृदयशूल कहते हैं उसमें दो मासे हिरणके मोंगका कुस्ता, दो तोले घी, आधपाव दूध

गरममें मिलाकर खानेसे हृदयशूल बन्द हो जावेगा जिस औरतको हमलहो और पेटमें दर्द हो तब कुसाकी जड़ दूधमें औटाकर पिलावे ।

नं० ८. फालिजसंख्याका कुस्ता तथा हरताल तथा शिंगरफ खुराक आधी रत्ती तथा रसमानिक एक रत्ती तथा तांवेका तथा सोनेका एक रत्ती यह सब दिये जा सकतेहैं, जिसका मौका देखे अनुपान हम वजन लॉंग मिलाकर शहदमें देना चाहिये अगर ज्यादा जहूरत हो तब कस्तूरी भी मिलादे तथा अर्क खुरा-सानीअजवायनका खंचकर १ एक तोला पिलाना चाहिये खानेको सबसे अच्छा जंगलीकबूतरका शोरवा देना चाहिये उसके बाद तीतर, बटेरका शोरवा देना चाहिये और मालिसमें रोगन लघुविषगर्भ तथा रोगन हवासल यह दोनों बहुत मुफीद हैं ।

नं० ९. आतशक शीशिका कुस्ता नं० १०७ पानपर रखकर १ रत्ती खिलाना चाहिये खटाई, गुड, तेल, लाल, मिर्च नहीं खाना तथा रसकर्पूर आधरत्ती बता-सेमें रख कर खिलाना चाहिये अगर बतासा गलेसे नहीं उतरे तो खांडकी छोटीसीगोली बनाकर पानीमें उसके अन्दर दवा रखकर निगल जावे दवा मुँहमें नहीं लगने पावे मुँहमें लगनेसे किसी किसीको सूहा आजाता है सबको नही आताहै और कुष्ठभी इससे अच्छा होताहै

खानेको चनेकी रोटी और घी खाना चाहिये, मीठा और निमक नहीं खाना चाहिये ।

नं० १० कुष्ठकी दवा—रसकर्पूर खिलानेकी तरकीब—
आतशककी बीमारीपर लिखी है तथा अंडी छीलकर एक
अंडी सवेरेको खावें दूसरे दिन दो अंडी छीलकर खावें
ऐसे रोज एक अंडी बढ़ाता जावे ४० दिन तक ४० अंडी
करे ४१ इकतालीसवें रोज एक अंडी कम करता जावे
८० अस्सी रोजमें यह प्रयोग पूरा होगा खानेमें चनेकी
रोटी और घी खावें मीठा और निमक नहीं खावें
कैसाही कुष्ठ हो आराम होजावेगा ।

नं० ११. तिछीकी दवा—चरचिटेकी वाल सुखलाकर
एक कोरी हांडीमें रखकर राखकरें और राखकी बराबर
सफेद खाँड मिलावे ६ छे मासे रोज सवेरेको पानीके
साथ खावें थोडे रोजमें तिछी जाती रहेगी ।

नं० १२. खून बंद करनेकी दवा—खून नाक, मुँह, गुदा
किसी जगहसे आवे नागररस नं० ६४ शीशेका कुस्ता
नं० ४७ अर्क अनार ५ = आधपावके साथ १ एकरत्ती
और १ एकरत्ती वंशलोचन मिलाकर खिलानेसे फौरन
बन्द होजावेगा और जो बीमार कमजोर होतो शर्वत
अनारके साथ खिलावें लेकिन शर्वत अनार अच्छा हो
बजारु न हो औरतके अगर खून आनेलगे वैसेही

हमलकी हालतमें खरैटीके जड़की छाल ४ चार मासे काढ़ा करके मिसरी डालकर पिलानेसे बंद होजावैगा॥

नं० १३. गठियाकी दवा-जोगराजगूगल अंडकी जड़के काढ़ेके साथ खिलाना चाहिये और मामूली दरदको अंडकी जड़का काढ़ा निमक डालकर देना चाहिये और हरतालका कुस्ता २ दोचावलभर गिरगौटेके मांसके साथ खिलानेसे आराम होजावैगा तथा शिंगरफ कुचलेवाला नं० ४० शहद और एक लौंगके साथ १ एक रत्ती देनेसे गठिया और वायुके दरद दूर होंगे इसकी खुराक वक्तजहूरत २ दो रत्तीतक कर सकते हैं रोगन नं० १३९ जिसकी तरकीब रोगनके साथ लिखीहै मालिस करनेसे फौरन आराम होताहै यह रोगन गठियाकी खास दवा है जिसका हाथ पैर गठियासे सूख गया हो इस रोगनसे अच्छा होजावैगा तथारोगन लघुविषगर्भ भी फायदा करताहै और अगर सुजाककी वजेसे हुआहै तब चन्द्र-प्रभा गूगल देना चाहिये ।

नं० १४. सुजाककी दवा कुस्तासोरा १ एक रत्ती पानपर रखकर खिलाना चाहिये तथा तज ८ माशे खूपकला ८ माशे छुआरा नग १ इनको रातको मिट्टीके बरतनमें पावभर पानीमें भिगोय दे सुबहको मलकर छानकर मिसरी डालकर पीले तथा शीशिका कुस्ता

मँलकर नाकके रास्ते उसको खींचे तो अव्वल छीकें आवेंगी वादमें रेजिस निकलना शुरू होजावेगी तीन रोजतक रेजिस निकलेगी और इन तीन रोजमें मूंगकी दाल रोटी सुश्क खाना चाहिये दिमाग साफ होजावेगा और सब बीमारी दिमागकी दूर होजावेगी पीनसकी भी यही दवा है ।

नं० १६. कमजोरी वाह वगैरा जिसकदर कुस्तेहैं सब फायदा करतेहैं लेकिन हमारे तजरबेके रसमानिक नं० ३० कुस्ताफौलाद नं० ५४ रोगनबेल नं० १३४ यह ज्यादा फायदा करतेहैं ।

नं० १७, अंजन नं० १२२ नम्बर० १९१ यह आजमायश करे हुए हैं तरकीब उनके साथ लिखीहैं॥

नं० १८, दिमागकी कमजोरी और दिलके धड़कनेकी और पित्तके बुखारकी कुस्तासंग इस्व व अकीक वंसलोचन सफेद इलायचीके साथ शर्वतअनाग व शर्वत नीलोफरमें खानेसे बहुत फायदा करताहै ॥

नं० १९, कमलबाय जिसको पीलिया भी कहते हैं और इरका भी कहतेहैं गूमेके पत्तोंका अर्क दिनमें तीन चार दफा सलाईसे आंखमें लगाना चाहिये और कड-तोंवीके बीजका अर्क नाकके रास्ते नास देना चाहिये इन दोनोंसे दो रोजमें आराम होजावेगा और खानेमें कासनी फाड़कर वंसलोचन सफेद इलायची शर्वत

नीलोफर मिलाकर पिये तथा कुस्ता संग इस्व वंस-
लोचन सफेद इलायची शर्वत अनार व शर्वत नीलो-
फरमें मिलाकर खिलानेसे फायदा होजावैगा ।

नं० २०. जहर खानेसे जिसको जहरका असर
होगया हो किसी किस्मका जहरहो पन्ना मणी असली
पानीमें धोकर तीन चार दफे पिलाना चाहिये जहर
फौरन उतर जावैगा ।

अथ सर्वधातु शोधनविधि नं० १.

पहिले तेल, मठा, गोमूत्र, कांजी, कुलथी इनमें
सात सात बार बुझानेसे सर्वधातु शुद्ध होतेहैं ।

अथ गन्धक शोधनविधि नं० २.

चमचेमें घीके साथ गन्धक पिघला कर छोड़ता
जावै दूधमें जब जरदी दूर हो जावै तब शुद्ध होगी ।

अथ अवरक शोधनविधि नं० ३.

अवरकको आगमें गरम करके गायके दूधमें त्रिफ-
लेके काढेमें, कांजीमें गोमूत्रमें सात सात दफे बुझावे
तो शुद्ध होय अथवा काला अभरक सात बार दूधमें
बुझावे फिर अवरकके बर्क अलग अलग होजावेंगे
तब चौलाई कागजीके अर्कमें आठ पहर घोटै और
चाहै आठ पहर इसीमें भिगोकर दो पहर घोटै तब
शुद्ध होगी ।

अथ शिलाजीत शोधनविधि नं० ४.

॥ आधसेर त्रिफला दरदरा कूट कर ३२ सेर पानीमें औटावे जब आठ सेर पानी जल जाय तब छान लेवे तिस पानीमें ३ तीन पाव शिलाजीत दरदरा कूट कर १ दिन राति भिगोवे फिर पानी टपका लेवे गादि न आनेपावे तिस पानीको कढ़ाईमें औटावे जब राब सा होजाय तब उतारले फिर गायका दूध त्रिफलाका काढा भँगराका अर्क इन तीनोंमें अलग अलग एक एक दिन घोटें तब शिलाजीत शुद्ध होय ।

अथ गूगल शोधनविधि नं० ५.

॥ आध पाव गूगलको ५ = तीन छटाक त्रिफलेके काढेमें औटा कर फिर छानकर कढ़ाईमें पका कर निकाल ले सब गूगल शुद्ध होगया ।

अथ धान्यावरककरणविधि नं० ६.

शुद्ध अवरक एक सेर और धान पावभर दोनों कमरी या गजीके थैलेमें भरकर तीन दिन भिगोय रखे फिर कुंडे या कठौतीमें दोनो हाथोंसे मलें पानीमें थैलीको दो पहरतक रखे फिर अवरकके चूरणको थैलीसे निकाल लेय और पानीमें रहे चूरणका धीरे धीरे पानी निकाल डालें फिर सबको इकट्ठा थैलीमें

भरकर फिर कठौतीमें और पानी डाल उसी थैलीको एक दिन भिगोय रखै सुबहको उसी तरह मलकर अबरक चूरण निकाल लेय ।

अथ शिंगरफशोधनविधि नं० ७.

शिंगरफको दो पहर कागजीके अर्कमें घोंटे और दो पहर भेडके दूधमें घोंटै तब शुद्ध होय ।

अथ हरतालशोधनविधि नं० ८.

तबकिया हरतालके टुकड़े करके पहिले काँजीमें दोलायंत्रसे एक पहर पकावे फिर पेठेके रसमें एक पहर, तिलीके तेलमें एकपहर, त्रिफलाके काढ़ेमें एक पहर पकावे तब शुद्ध होय और फूकने योग्य होय ।

अथ मनसिलशोधनविधि नं० ९.

मनसिलको तीन दिन बकरीके मूत्रमें अथवा कुम्हेडेके रसमें ओढ़ानेसे शुद्ध होताहै ।

अथ कुचलाशोधनविधि नं० १०.

छटाक भर कुचला डेढ़सेर दूधमें ओढ़ावे जब दूध खडी होजाय तब कुचला निकाल कर धोय ले तब शुद्ध होय ।

अथ फिटकरीशोधनविधि नं० ११.

फिटकरी फूला करनेसे शुद्ध होतीहै ।

अथ मीठातेलिया शोधनविधि नं० १२.

मीठे तेलियाको गायके मूत्रमें तीन दिन भिगोवै जब उसमें सींक छिदकर पार होजावे तब शुद्ध होगा ।

अथ धतूरा शोधनविधि नं० १३.

छटाक भर धतूरा डेढसेर दूधमें औटावे जब दूध रबड़ी होजाय तब धतूरा निकाल कर धोय ले तब शुद्ध होगा ।

अथ सोनामक्खी शोधनविधि नं० १४.

तीन पैसेभर सोनामक्खी और एक पैसेभर सेंधानोन दोनोंको जमीरीके अर्कमें अथवा विजौरेके अर्कमें आँचके ऊपर कढ़ाईमें घोटे करछुलीसे जबतक सुख न होवै तबतक घोटे जाय जब खूब सुख होजाय तब जानौ शुद्ध होगई अगर सेंधानोन नहीं डालै तौ भी कुछ हरज नहींहै ।

अथ जमालगोटा शोधनविधि नं० १५.

जमालगोटा वक्कल दूकर पोटली बांध दूधमें दोलायंत्रद्वारा पकावे एक घंटा फिर जमालगोटाके बीचमेंसे जिह्वा निकाल डाले बादको पानीमें घोटकर कोरे खपडोंपर लेप करै जब खूब सूख जाय तब छुडाकर रख छोडै जो चिकनापन बाकी रहजाय तौ फिर घोटकर खपटे पर लेप कर दे सूखनेपर छुडा ले तब शुद्ध होगा ।

अथ भिलावा शोधनविधि नं० १६.

हवासे टूटकर गिरे हुए भिलावाको लेकर कपड़ेमें बाँधकर जमीनमें फैला कर इँटसे मसलें फिर पानीसे धोयकर हवामें सुखलावे फिर दो दो टुकड़े करके चाँगुने पानीमें ओटावे जब चौथाई पानी बाकी रहे तब उतार लेय इसी तरह दूधमें ओटाकर धोकर बीमें धून ले तो शुद्ध हो ।

अथ पाराशोधनविधि नं० १७.

पहिले रूमी शिगरफ कागजीके अर्कमें घोटकर टिकिया बनाय कर सुखाय कर डमरूयंत्रसे पारा निकाल ले फिर दो गड्डे खोदे जिसमें खरल आजाय एक गड्डेमें आग जलावे जिसका धुआँ निकल जाय तब उसपर खरल रखकर घोटें खरल ठंडा न होने पावे दिन रात घोटें इसको तप्त खरल कहतेहैं और इन चीजोंमें घोटें चीतेके काढेमें, हरिके काढेमें, आकक दूधमें, सेहुँडके दूध तथा अर्कमें, धतूरेके, अर्कमें, कलहारीके अर्कमें, फनरके अर्कमें, घुँघचीके अर्कमें, चीगुवारके अर्कमें लहसुनके अर्कमें इन सब चीजोंमें सात सात दिन आँग रात घोटें जब एक दवाईकी भावना पूरी होजाय तब धोय कर साफ करके दूमरी दवा डाले इस प्रकारसे पारा शुद्ध होजायगा ।

अथ राँगशोधनविधि नं० १८.

राँगको तेल, मठा, गोमूत्र, काँजी, कुलथी, इनमें सात सात बार बुझावे राँग शुद्ध होजायगा ॥ सिवाय तेलके और चीजोंमें जो बुझाव दिये जावें तो बरतनके मुँहपर काठका ढकना लगादे उसमें सूरख करदे उस सूरखके रास्ते राँग डाले क्योंकि राँग बुझावदेनेमें ऊपरको उडताहै ।

अथ सीसा शोधनविधि नं० १९.

सीसाको तेल, मठा, गोमूत्र; काँजी, कुलथी इनमें सात सात बार बुझावे सीसा शुद्ध होजायेगा ।

अथ कैचकेबीजशोधनविधि नं० २०.

कैचके बीजकी गिरी निकाल ले कैचके बीज शुद्ध हो जायँगे ।

अथ धातुओंकीक्रियाविधि नं० २१.

सब धातुओंको बनानेके बाद चूल्हेके नीचे गाड़ दे जिसमें आग जलती होय जितने साल गडी रहेंगी उतनीहीं अच्छी होगी ।

अथ चाँदीकी भस्म करणविधि नं० २२.

अजवायन ६ छे तोले एक रुपयेके आधी ऊपर रखे आधीनीचे रखे चारसेर कंडोंमें, उसका गोवरसे संपुटकर सुखायकर आच देवे इसी तरह बारह आच

दे रुपया फूल होजावेगा सुराक १ रत्ती सहतमें खावै धातुको पुष्टकरै और ताकत करै ।

अथ चाँदी वा राँगकी भस्मकरणविधि नं. २३

चाँदी शुद्ध और राँग शुद्ध दोनों बराबर लेकर राँगको पीसले फिर चाँदीका बुरादा करले दोनोंको मिलाय कर फिर हरताल बराबरका मिलाय कर काग जीके अर्कमें घोटै फिर टिकिया बनाकर सुखाकर चार सेर कंडोंकी आँच दे इसी तरह बारह आँच दे और हर आँचमें दसवां हिस्सा हरताल और डालता जाय फिर धीगुवारकी बारह आँच दे हरताल न डालै जब भस्म होजाय तब रख ले मात्रा आधी रत्तीसे एक रत्ती तक, केसर वंशलोचन, इलायची, सपेप मोती मिलाकर सहतमें खावै या पानीमें गोली बनाकर खावै तो बहुत बलकरै और धातुको वंसलोचन सपेदइलायची सतगिलोय ये सब एक एक रत्ती दवामें मिलाकर सह तके साथ खावै ऊपरसे दूध पिये धातुपुष्ट होगा ।

अथ सोनेकी भस्मकरणविधि नं० २४.

सोनेका चूर्ण करके कुकरोँधेके अर्कमें चार पहर अच्छी तरह ऐसा घोटै कि सोना अर्कमें मिलजाय फिर टिकिया बनाकर कुकरोँधेकी लुगदीमें रख कर सरवामें संपुट करके एक कपड़ौटी कर पाँच सेर अरने कंडोंकी

आंच दे थोडा पारा भी पहिलेही मिला ले अर्क कुकरोंदाफाडले उसमें खरलकरै सोना भस्म होजायगा मात्रा एक चावलसे दो चावल तक पुराने बुखारको शीतकी सांसको बहुत गुण करताहै और ताकत देता है अनुपान जो रसमानिकका है वोही इसकाहै कमज्यादा मौका देखकर करै किसी बख्त आदमीका बोल बन्द होजावै तौ १ चावल दवा और तीन चम्मच चाहके साथ पिलावे तो उसीवक्त बोल खुल जावैगा ।

अथ सोनेकी भस्मकरण दूसरी विधि नं० २५.

सोना दो तोले कविस मिट्टीमें लपेटकर आगमें लाल करके केलाके जडके अर्कमें या अगस्तके फूलके अर्कमें सातबार बुझाकर टुकडेकरबराबर पारामिलाकर खरल कर चार तोलेगन्धकतेल ऊपर देकर संपुटकरके पांच गिरहका गढा खोदकर तीस अरनेकंडोंमें फूकदे ऐसेही चौदह १४ आंच देतब भस्म होगा परन्तु हर एक आंचमें पारागन्धक डालता जावै जैसा ऊपर लिखाहै

अथ चन्द्रोदयकरणविधि नं० २६.

पारा, शिंजरफ, रांग, तूतिया, शोरा इन सबकोटका टकाभर लेकर केलेके अर्कमें पीसकर आतशी शीशीमें भरै फिर एक हांडीमें नीचे छेद करके भीतरसे अवरख छेद पर रखदे हांडीमें शीशी रखकर रेत भरदे मुह

शीशीका खूब वन्दे करदेफिर आठपहरकी आंचदेठंडी होजावे तब निकाल ले रंग गुलाबी होजायगा खुराक आधी मूँगकी बराबर कुष्ठवालेको मक्खनके साथ खिलावे और सीतका पसीना आताहो तब एक रत्ती अदरखके अर्कके साथ खिलावे और भूखके वास्ते एक रत्ती लौंग मिला कर सहतमें खिलावे और पुष्टिके वास्ते लौंग, जावित्री, जायफल इलायची सपेद, वंशलोचन यह सब आधी आधी रत्ती चांदीका बर्क एक कस्तूरी एक चावल इन सब चीजोंको पीस कर दवा मिला कर मक्खनके साथ खिलावे और सुजाकके वास्ते छे मासे विहीदाना भिगोकर लवाव निकालकर उसमें मिसरी डालें और दवाके साथ वंसलोचन इलायची सपेद सतगिलोय एक २ रत्ती मिलाकर लवाव विहीदानाके साथ खावै ।

अथ चन्द्रोदयकरण दूसरीविधि नं० २७.

पारा, गन्धक, अवरक, वंग, शिलाजीत, इलायची सपेद इन सबको बराबर लेकर, केलेके अर्कमें ४ चार पहर खरल करे फिर सुखाकर रखले मात्रा २ दो रत्ती से ४ चार रत्ती तक सहतमें खिलावे तब वीर्य वृद्धिही काम अधिक बढ़े गरमी करे तौ बराबर गिलोयकारस लाकर खिलावे और ऊपरसे दूध पिलावे और प्रमेहवालेको सहत साथ खिलावे तौ अच्छा है ।

अथ रसमानिकविधि नं० २९.

पहले पारा मुर्गीके अंडेके भीतर भर कर उस पर कपड़मिट्टी करे फिर एक हाँडीमें ५५ पाँच सेर अर्क आकासवेल भर कर उसमें अंडा रखकर आगके ऊपर चढ़ावे जब चौथाई अर्क बाकी रहै तब ५५ पाँच सेर मठा उसीमें डालदे जब चौथाई बाकी रहै तब हाँडीको उतारले ठंडा होनेपर पारा निकालकर साफ करले फिर ४ चार तोले सेंधानोनमें पारेको खरल करे एक दिन बराबर खरल होता रहै फिर पारा साफ करके इसी दो २ तोले पारामें दो २ तोले मनसिल मिलाकर खरल करके तौवेकी डिवियामें भरकर ऊपरसे कपड़मिट्टी करे फिर बालूयंत्रमें आठ पहरकी आँच करे बेरीकी लकड़ीकी फिर लकड़ी निकाल कर कोयले चूल्हेके अंदर रहै जब हाँडी

अथ रसमानिक दूसरीविधि नं० ३०

पारा पहले रसमानिककी तरह शोधले पारा २ तोले मनसिल चार ४ तोले संख्या दो २ तोले गन्धक दो २ तोले इन सबको खरल करके आतशी शीशीमें भरके शीशीका मुँह बन्दकरै और बालुकायंत्रमें चढावै आँच पह्र आठ ८ की करै बेरीकीलकडीकी फिर लकडी निकाल कर कोयले चूल्हेके अन्दर भरे रहैं जब ठंडी होजावै तब निकाल ले शीशीकी तलीमें जो दवा रहैगी वह कोट कहलायेगी और जो दवा शीशीके ऊपर मुँह पर आजाय वो फूल रहैगा गुण फूलमें जियादह है मात्रा १ रत्ती वंसलोचन १ मासे इलायची सपेद १ मासे दवामें मिलाकर सहत ६ मासेके साथ खावै भूख करै नामर्दको मर्द करै ।

अथ रसमानिक तीसरीविधि नं० ३१.

पारा शुद्ध ८ आठतोला सीसा शुद्ध छे ६ तोला गंधक शुद्ध आठ तोला मनसिल शुद्ध आठ ८ तोला पहले सीसेको गरम करके उसमें पारा मिलायदे फिर सबको सुरमेकी तरह खूब पीसकर आतशी शीशीमें भरकर चढायदे आँच २४ पह्र की दे भट्टी बनावे उसके मुखपर चार तरफको चार झरोखा रखे जिसमेंसे

अथ हरतालकी दूसरी विधि नं० ३४.

छटाक भर हरतालको पहिले दहीमें डालकर सात रोजतक रखदे पीछे हरतालको घीगुवारके अंक्रमें खरलकर टिकिया बनाकर सुखावै फिर पीपलकी लकड़ीकी राख ढाईसेर कपडछानकरै एक हाँडीमें सवासेर राख भर कर हरतालकी टिकिया रखकर फिर ऊपरसे सवासेर राख भरकर हाथसे खूब दबादे चूल्हे पर चढाय कर बेरीकी लकड़ीकी बहुत मँदी आंच दे हाँडीको देखेता रहे राखमें दराज आवै तौ थोड़ीसी राख डालकर दबादे आंच मंदी करै इसीतरह छेपहर आंच करै उसके बाद हाँडी ठंढी होनेपर उतारले दवा निकालले टिकियाके ऊपर जो राख जम जाय उसको छील डाले हरताल सपेद होजायगा जो कुछ जरदी बाकी रहे तौ दूसरे रोज आंच फिर देवे हाँडीकी दराजका ख्याल न करेगा तौ हरताल उड़ जायगा यह हरताल जिसको रोज बुखार आताहो या रोज बढ जाताहो या जाडा देकर आताहो या सिर्फ बुखार आता हो या तिजारी या चोथिया आतीहों सबको डेढ घंटे पहिले एक चावल या दो चावल अखीर चार चावल तक कच्चे दूधमें खिलावे अच्छा होजायगा और सुजाकके वास्ते भेडके दधका

खोवा करके उसमें दवा मिलाकर खिलावै ऊपरसे कच्चादूध पिलावै अच्छा होजायगा दूध वगैर मीठका पीये गुड तेल, खटाई, लालमिरचका परहेज करे कुव्वते वाहको गरगौटां चिडियाके गोश्तमें मसाला डालकर भूनकर उसके साथ खावै तथा नामर्दीवालेको भी इसी तरकीबसे खिलावै ऊपरसे वगैर मीठका दूध चावल खिलावै और धातु पतलीके वास्ते गायके कच्चे दूधमें खिलावै सात रोजतक ऊपरसे मलाई घी चावल खिलावै और सन्निपातके लिये अदरकके अर्कमें खिलावै ऊपरसे घी पिलावै और दमेके वास्ते वजरिया मछलीको मसाला डालकर घीमें पकावै उसमें दवा डालकर खिलावै ऊपरसे चनेकी रोटी मछली खिलावै तीन रोजतक, और फालिजके वास्ते मुरगीके कच्चे अंडीमें रखकर खिलावै ऊपरसे कच्चा दूध वगैर मीठका पिलावै, और बुखारके वास्ते अदरक ३२ मासे अजवायन ४ मासे इनको पीसकर अर्क निकाल कर इनके साथ खिलावै ऊपरसे कच्चा दूध पिलावै और जिस्मके दरदके वास्ते भेडके दूधके खोवेके साथ खिलावै ऊपरसे घी खिलावै पथ्य दूध चावल अरहरकी दाल वगैर नमक की ।

अथ संखियाकी विधि नं० ३५.

छटाकर भर संखिया घीगुवारके अर्कमें खरल करके

लपट निकलती रहै उन झरोखोंके ऊपर ईंटोंको ऊँचा करदे जिससे लपट हांडीके मुखतक जाय १६ पहर आंच होनेपर हांडीके मुखको ढकदे जब हांडीकेमुखका रेत ऐसा गरम होजाय कि जिसमें धानकी खील हो जाय तब जान ले कि दवा ठीक बन गई रंग सुर्खहोगा काला रंग हो जाय तो जानो दवा नहीं बनी दवा शीशीकी नारमें आजावै वह बन गई या जो शीशीकी पेंदीमें दवा सुर्ख होजाय तो जानलो कि बन गई २४ पहरमें नहोवै तो ३२ पहरकी आंचदे हांडीकी पेंदीमें छेद करके अवरख लगावे छेद एक रुपये बराबर चौड़ाकरै उस अवरखके ऊपर शीशी रखकर बालू भरदे मात्रा १ रत्तीकी पुष्टिके वास्ते जावित्री, जायफल, लौंग, केशर, वंशलोचन, इलायची, सपेद, मोती यह सब एक एक रत्ती मिलाकर बारीक पीस कर सहतके साथ खावे और फालिजके वास्ते दवा १ रत्ती जावित्री कस्तूरी १ चावल सहतमें मिलाकर खावै और सीत आगया हो या सांस सरदीसे बढ गई हो तो १ रत्ती दवा अदरकके अर्कके साथ खिलावे पूरी मात्रा १ रत्तीकी हे वाकी जैसा मौका होय कमदे बलगमीखांसीको बहुत फायदा करता है अनुपान ऊपर लिख चुके हैं मौकेके साथ देना चाहिये ।

अथ रससिन्दूरविधि नं० ३२.

पारा शुद्ध पल पांच ५ गंधक शुद्ध पल पाँच ५ नौसा-
दर टंक दोरफिटकरी टंक चार ४ इन सबको पीसकर
आतशी शीशीमें भर कर रसमानिककी तरह पका
लेवै आँच पहर २४ की दे मात्रा पूरी १ रत्तीकी, यह
सरदीकी बीमारीको जियादा फायदा करताहै और
बल करनेमें किसी कदर रसमानिकसे कमहै और वांकी
वोही तासीर है वोही अनुपान है आँच मामूली लक-
डीकी करना चाहिये ।

अथ हरतालकी विधि नं० ३३.

हरताल पैसा दोरभर लेकर घीगुवारके रसमें खरल
करे पहर आठ ८ फिर सहजनेकी जडके रसमें खरल
करे पहर आठ ८ फिर गोली वनायकर सुखायकर का-
गजी नीबूके भीतर धरे और ऊपरसे सात कपडौटी करे
और गोला बनावे तिस पीछे पीपलकी लकडीकी राख
कराये हाँडीमें भरे तब गोला बीचमें रखकर ऊपरसे राख
मुँहतक दाविके खूब भरे और हाँडीपर सात कपडौटी
करे फिर हाँडीके मुखपर परियाधर वज्रमुद्राकरे तिस-
पर तीन कपडौटी कर सुखायकर भट्टीपर चढाय दे
आँच पहर २४ की देय ठंडा होय तब उतारले वस हर
ताल बनगया मात्रापूरी १ रत्तीकी पानके साथ खावे ।

टिकिया बनाय कर सुखावै फिर आधाझारेकी राख करक एक हाँडीमें सवासेर राख भरकर बीचमें टिकिया रखवै फिर ऊपरसे सवासेर राख भरै और खूब दबायदेय चूल्हेपर चढाय कर बेरीकीलकडीकी आँच दे हाँडीको देखता रहै राखमें दराज आवै तो थोडीसी राख डालकर दवादे आँच मंदी करै इसी तरह आँच छै पहर करै उसके बाद हाँडी ठंडी होने पर उतार ले दवा निकालले टिकियाके ऊपर जो राख जमजाय उसको छील डाले संखिया सफेद होजायगा जो कुछ जरदी बाकी रहै तो दूसरे दिन फिर आँच देवै संखियाकी मात्रा तथा अनुपान तथा गुण हरताल नं० ३४ के मुताबिकहै और कोढ तथा फालिज तथा कुव्वतवाहाको भी बहुत फायदा करताहै तरकीब सब हरतालके मुताबिक है ।

अथ शिंगरफकी विधि नं० ३६.

टके भर शिंगरफ अदरकके आधसेर अर्कमें घोटते घोटते सुखा ले शिंगरफ बन गया मात्रा आधी रत्तीसे १ रत्तीतक बलगमी खाँसीको पानमें रखकर खिलावै और बुखारवालेको तुलसीकी पत्तीमें रखकर खिलावै घंटेभर पहले बुखारसे और कुव्वतवाहाको सहतमें खिलावै फायदा करेगा ।

अथ शिंगरफ वजरकंधेवालेकी विधि नं० ३७.

शिंगरफको जेतीके रसमें कागजीके रसमें कांजीमें तीन तीन दिनतक दोलायंत्रसे पकावै । इति शोधन ।

अथ मारण ।

ऐसे शुद्ध हुए शिंगरफको पैसा पैसा भरकी चार डेलियोंको चार तह कपड़ेकी छोटी थैली बनावै उसमें डालकर थैलीका मुह डोरेसे बांध दे और पावभर वजरकन्धेको पीसकर गोला बनाकर थैली शिंगरफकी गोलाके बीचमें रखकर ऊपरसे अंडके पत्तोंसे लपेटकर उसके ऊपर मट्टी लगाकर गोला बनावै और दस कंडोंकी आंच फूकदे कंडे पांच ऊपर पांच नीचे रखवै बीचमें गोला रखकर फूकदे ठंडा होने पर थैली गोलामेंसे निकाल ले इसतरह वजरकन्धेकी १०८ आंच दे हर आंचमें पावभर वजरकंधा पीसकर शिंगरफकी थैली पर लगाकर गोला बनाया जायगा और अंडके पत्ते लपेट कर ऊपरसे मट्टी लगा कर गोला बना कर दश कंडोंमें फूँका जायगा कंडे न पतले हों न मोटे हों अच्छे हों इस प्रकार फूँका हुआ शिंगरफ चन्द्रोदयसे भी अधिक गुण करताहै मात्रा १ रत्तीकी १ रत्ती लौंग मिलाकर सहतमें खावै

सुवहको भूख करता है काम अधिक होय इसका अनुपान चन्द्रोदयके मुताबिक है वैद्यदर्पणकी रीतिसे बनाया और वरता है ।

अथ शिगरफ की विधि नं० ३८.

शिगरफ १ तोला लेकर पहिले तीन दिन दौना-मडुवाके अर्कमें भिगोया जावै चौथे दिन १ तोला अफीम उसी दौनामडुवाके अर्कमें मिलाकर एक कप-डेकी पट्टीपर खुश्क करके शिगरफ पर लपेटदे और डो-रेसे खूब बांधदे फिर १ सेर रोगन कडुआको कढ़ाईमें आंचपर चढावै और बेरीकीलकड़ीकी आंचमन्दीमन्दी चार पहर दे अगर चार पहरमें रोगन न बलै तो आंचसे बालदे इसी तरह तीनदिन आंच दीजावै तब शिगरफ बन जायगा पुरना होनेसे आधी ॥ रत्तीसे १ रत्तीतक मक्खनके लाथ खाये कुव्वतवाहाको बहुत मुफीद है ।

अथ शिगरफ संखियाकी विधि नं० ३९.

शिगरफ १ एक तोलाकी छोटी डली और सफेद संखियादमासेकी छोटी डली लेकर दोनोंको वनअंजी-रके दूधमें भिगोकर सात दफे खुश्क करै फिर तिल्लीका तेल २ दो सेर लेकर एक कढ़ाईमें चढावै उसमें शिगरफ संखियाकी डली चार तह कपडेमें बांधकर लटकावै और चार घण्टेकी मन्दी आंच देवै फिर नीचे

लिखे हुए काढेमें दवाईको पीसकर खरल करै जब सुश्क होजावै तब रखले दवाई बन गई काढा ॥ = ॥ पाव पानी चढावै जब ५ = आधपाव रहजावै तब काढा छानकर उसमें खरलकरे दवा काढेकी जाफरान ४ मासे लौंग ४ मासे इलायची सफेद ४ मासे जायफल ४ मासे अफीम ४ रत्ती मूसली सफेद १ तोले, खुगक एक चावल दमाको अनारके छिकलाकी राखमें दे, सूखे दमाके वास्ते जामनके मुकत्तरमें, पित्तीके वास्ते १ तोला मुकत्तरमें ।

अथ शिगरफकी विधि नं० ४०.

१ शिगरफ २० तोले २ भेड़का दूध ५॥ सेर, ३ सफेद घुंगुची ४० तोले, ४ कुचलेका पानी ५१ ॥ सेर, ५ मीठा तेलिया २० तोले, ६ भिलावा २० तोले, ७ लौंग ३० तोले, ८ आकका दूध ५॥ सेर, ९ थूहरका दूध ५॥ सेर, १० बड़ी इलायची १० तोले, ११ केशर १॥ तोले, १२ अफीम १ तोला १३ शराब २ बोतल, १४ मुर्गेके अण्डे २४ नग, १५ बकरेका खून ५२ सेर इन सब दवावोंको सात रोज घोटै और पकी चीनीके पियालेमें रखकर दूसरे पियालेसे ढक दे और ऊपरसे १ कपड़मिट्टी करके उस सम्पुटको वालूके बीचमें हांडीमें रखवै और हांडीका मुंह बन्दकरके कपडौती करदे और ५८ सेर कंडोमें रखकर फूंकदे निकालै तो

रंग सुख होगा और तेलका कुछ गीलापन रहेगा
 खुराक १ रत्तीसे ४ रत्तीतक, वातव्याधिको फायदा
 करता है और पुष्टभी है अनुपान जैसा मौका हो लेकिन
 दवा सुखाकर पियालेमें रखे ।

अथ अभ्रककी विधि नं० ४१.

कृष्ण अभ्रक लेकर कूटके महीन रेतसा करले और
 काले कुकराँदेमें जिसकी डंडी काली होती है उसके
 अर्कमें घोट्टे चमक जाती रहे उसके पीछे टिकिया
 बनाकर सुखाले फिर भंगको बारीक पीसके कागजके
 समान टिकिया पर लेप करे फिर उसको सुखा ले
 दो सरवोंमें रख गजपुटकी आंच दे सरवोंका मुह बन्द
 न करे एकही आंचमें भस्म होगा रंग सुख होगा ।

यह एक आंचका अभ्रक १००० आंचकी बराबर
 गुण करता है और वही अनुपान है और सरवेके अंदर
 टिकियाके तले ऊपर एक एक पत्ता आकका रखदे
 लेकिन २ तोले दवा हो और २ रुपये बराबर टिकिया
 बनावे तब दवा ठीक बनैगी ।

अथ अभ्रकरसायन नं० ४२.

कृष्ण अभ्रकको शुद्ध करके दो दिन जँभीरीके रसमें
 घोट्टे तीन दिन काँजी संगके १ दिन त्रिफलाके रसमें
 १ दिन सेंजनेके रसमें घोट्टे १ दिन छुईमुईके रसमें १

दिन असगन्धके रसमें घोटै फिर सम्पुटमें धरके १ मटकेमें कंडेका चूर्ण करके भरदे और बीचमें दवाईका सम्पुट धरके फूँकदे जब ठंडा होजाय तब निकालै मात्रा एक उडद बराबर खाय नारियलके दूधके संग खानेसे सब रोगको दूर करै और मुरैठीके चूर्ण और ब्राह्मीके रसमें सेवनसे आयुको बढ़ावै और सब रोग दूरकरै और शंखाहुलीका चूर्ण और गिलोयके रसमें खाय तो उमर बढ़ै और सब रोग दूरहोयँ और भँगरापत्र आमलेका चूर्ण मिश्री काले तिल मिलाय उसके साथ खाय तो बुढापा नहीं होय भँगरेका रस और दूध मिलायके खाय मूक वक्ता होय और बहिरा सुनने लगे जिसके पुत्र न होय उसके पुत्र होय बाल काले हों दांत पुष्ट हों शरीर पुष्ट होजावै ।

अथ अभ्रककी दूसरी विधि नं० ४३.

धान्याभ्रकको एक दिन कुकुरोंधेके रसमें घोटै और टकेभरकी टिकियाको बाँधै घाममें सुखायटिकियाके तले ऊपर आँकका पत्ता रखवै सरवा सम्पुटकरके दो सेर कंडेके बीच सम्पुट धरके आँच दे ऐसे ही चौदह आँच दे अथवा जबतक चमक रहे तबतक केवल कुकुरोंधेके रसमें घोटके और इसी तरह एक दिन गोमूत्रसे घोटके सात आँच दे और इसी तरह त्रिफलाके

काढ़ेमें एकदिन घोटके सात आँच देवे तिस पीछे एक दिन आकके दूधसे घोटके ७ सात आँचदे तिस पीछे जो बहुत लाल करा चाहे तो १५ या २० दिन वर्गदकी जटाके रसमें घोट घोट ७ आँच दे अदरकके अर्कमें आखीर वक्त जब शीत आगया हो तब दिया जावै ।

अथ सहस्रपुटी अभ्रकमारणविधि नं० ४४.

आँकके दूधकी १६ पुट, १ बटके दूधकी १६ पुट, २ थूहरके दूधकी १६ पुट, ३ घीगुआरके रसकी १६ पुट, ४ अंडके जडके रसकी १६ पुट, ५ कथकी १६ पुट, ६ मोथा १६ पुट, ७ गिलोय १६ पुट, ८ भाँग १६ पुट, ९ गोखरू १६ पुट, १० कटेली १६ पुट, ११ शालपर्णी १६ पुट, १२ पृष्ठपर्णी १६ पुट, १३ सरसों १६ पुट, १४ चिरचिटा १६ पुट, १५ वर्गदकी जटा १६ पुट, १६ बेलकी छाल १६ पुट, १७ अरनी १६ पुट, १८ चीता १६ पुट, १९ तेंदू १६ पुट, २० हर्डकी वकली १६ पुट, २१ पाढर १६ पुट, २२ गोमूत्र १६ पुट, २३ आमला १६ पुट, २४ बहेडा १६ पुट, २५ जलकुम्भी १६ पुट, २६ ताली-सपत्र १६ पुट, २७ ताडवृक्षकी जड १६ पुट, २८ विसौंटा १६ पुट, २९ असगंध १६ पुट, ३० अगस्तके रसकी १६ पुट, ३१ भेंगरा १६ पुट, ३२ केलाकन्दके रसकी १६ पुट, ३३ धतूरेके रसकी १६ पुट, ३४ लोध

१६ पुट, ३५ देवदारु १६ पुट, ३६ दोनों दूबके
रस १६ पुट, ३७ कसौंदी १६ पुट, ३८ मिर्च १६ पुट,
३९ अनारके रस १६ पुट, ४० मकोय १६ पुट, ४१
शंखपुष्पी १६ पुट, ४२ तगर १६ पुट, ४३ ब्राह्मी १६
पुट, ४४ सूर्यमुखी १६ पुट, ४५ इन्द्रायन १६ पुट, ४६
भारंगी १६ पुट, ४७ घुसरायन १६ पुट, ४८ कैथ १६
पुट, ४९ शिवालिंगी १६ पुट, ५० ढाक १६ पुट, ५१
तुरई १६ पुट, ५२ मूसाकर्णी १६ पुट, ५३ जवासा १६
पुट, ५४ मछेली १६ पुट, ५५ कलौंजी १६ पुट, ५६
हुलहुला १६ पुट, ५७ शतावर १६ पुट, ५८ बकरेके
खूनकी १६ पुट, और अधिक देना चाहे तो जटा-
मासीकी १ पुट, गोदूधकी १ पुट, १ गोदही १ पुट,
गोघृत १ पुट, शहद १ पुट, खांड १ पुट, पालक १ पुट,
मैनफल १ पुट ।

बाकी वरगदकी जटाके काढेकी पुटें दे जवतक
लाल होय इससे अधिक और देना चाहे तो एक एक
पुट इन दवाइयोंकी और देदेय ।

ढाकके फूलकी १ पुट, गुड़की १ पुट, सुहागा १
पुट, चमेली १ पुट, सप्तपर्णी १ पुट, कैच १ पुट, गाजर
१ पुट, पियाज १ पुट, ९ लहसुन १ पुट, उदंगन १
पुट, हिलमोचिका १ पुट, अमलवेत १ पुट, दूधी १

पुट, पातालगडरी १ पुट, सुराक २ चावलसे १ रत्ती तक खिलाया जावेगा अनुमान जैसा मौका देखें और इसके गुण अनन्त हैं ।

अथ तांवामारणविधिपहिली नं० ४५.

तांवा बीस तोले, पारा दस तोले, गंधक बीस तोले सब शुधे हों तांवेके बर्क जौके बराबर काट लिये जावें फिर पारा डाल कागजीके अर्कमें जबतक पारा चढे तबतक घोटै जब सब पारा चढि जाय तब तीन दफे कागजीका अर्क डाल कर एक एक पहर घोट घोट कर धोता जाय फिर सुखा कर गन्धक डालै बारीक खेरल करके शीशीमें भर वालूयंत्रसे बारह पहरकी तेज आंचदे तब भस्म हो फिर वीगुवारमें खेरल कर गज पुटमें सात आं चदे तब सिद्ध होगा ।

मात्रा रत्तीभर देसूके फूलके काढेमें दे तौ पेट फूलना और पेशाब बन्द होजाना दूर होजाय, सन्निपात फोतामें पेशाब उतरि आताहे उसमें दे बाकी बहुत मजौकी दवाहे ।

आगे ७आंच वीगुवारकी देओ अथवा नहीं देओ जो तांवेमेंके आनेकी भ्रांति रहिजावे तौ वीगुवारके आंच देनेकी जरूरतहे वरना नहीं ।

अथ शीशे (नागरस) की पहिली विधि नं० ४६.

पहिले शीशेको कढ़ाईमें चढ़ा कर ऊपरसे मकोयके पेड़की पत्ती सब डालता जाय औरकरछुलीसे चलाता जाय जबतक भस्म न होवै दो दिन आँच देय फिर कागजी या दहीके रसमें टिकिया बाँधिके सुखाकर फिर चार पहर आँच देय दो दो घंटेको ढक देय रंग सुख हो जावैगा, मात्रा रत्तीभर बुखार और खाँसीके लिये कुव्वतके लिये और सुजाक पुरानी होनेकी वजहसे कमर या पिउडीमें दरद रहताहो इन सबके लिये चटनी सितोपलादमें दिया जावै बहुत नफा करताहै।

अथ शीशेकी क्रिया नं० ४७.

शुद्ध शीशा एक मिट्टीके ठिकरमें एक सेर डालै आगपर चढ़ावै केवड़ेकी लकड़ीसे चलता जाय जबतक भस्म होवै, उसके बाद शोरा एक सेर पिस कर रखले थोड़ा थोड़ा डालता जाय लेहेकी करछीसे चलाता जाय तब शोरा कीचड़की तरह पतला होजाय तभी और डालता जाय जब सब शोरा पड़ चुके जब जरा दूरसे घोटता जाय शोरा एकदम बल जायगा तब सब दवाको ठिकड़ेमेंसे छील कर इकट्ठी करके धो लेय उसके बाद वरगदकी जटाके अर्क

और केवड़ाकी जड़के अर्कमें घोंटकर टिकिया बनावै सुखाकर रख लेय फिर पाव भर दवाको चार सेर कंडोंकी आँचमें सम्पुट करके जवतक शीशा भस्म होकर नरम नहो जाय तबतक आँच देवै यह वैद्यककी नहीं है हमारी जाती निकाली हुई है इस शीशोका रंग कदर जरद होगा मात्रा आधी रत्ती आध पाव अर्क अनारशीरीके साथ दिया जावै, तो खून बवासीर बन्द होगा और सुजाकको अर्क गिलोय दो तोले और शहद एक तोलेके साथ दिया जावै । और छुहारा धेला भर तज धेला भर खूबकला धेला भर शामको एक मिट्टीके बरतनमें पावभर पानीमें भिगोवे सुबह छान कर मिश्री डालकर पिये सिर्फ यही बहुत नफा करता है अगर इसके साथ कुश्ता दिया जावै तो बहुतही फायदा करता है और विहीदानाके लुआवके साथ कुश्ता सुजाकमें खिलावै ।

अथ कुश्ता राँग का नं० ४८.

शुद्ध राँगको कढ़ाईमें गलावै और भाँग इमली हलदी पीपलकी छाल यह सब चीजें राँगके बराबर बराबर लेकर पीस कर रख ले जिस वक्त राँग गल जावै तब उसमें थोड़ी थोड़ी चीजें डालता जावै और करछलीसे चलाता जावै जब सब राख होजावै तब ढक कर कढ़ा-

ईमें दो पहर खूब आंच दे फिर उतार कर रखले जब ठंडी हो जावै तब छान कर रख ले फिर गुवारके रसमें घोटकर टिकिया बनाकर सुखा ले आठवां हिस्सा अजवायन नीचे सरवैमें बिछा कर ऊपर टिकिया रखै फिर टिकियाके ऊपर अजवायन आठवां हिस्सा बिछावै और आंच दे फिर खालिस घी गुवारके रसमें घोटे और १७ आंच दे फिर घी गुवारके रसके साथमें वारहवां हिस्सा पारा शिगरफका निकला हुआ डालकर आंच दे पाराहर आंचमें पड़ेगा फिर हलदी सेमलकी मूसली सतावर गोखरू तालमखाना बीजबंद गिलोय संभालू इन सबकी तीन तीन आंच दे यह वंग बहुत अच्छी है, प्रमेह जरियान प्रदरको १ रत्ती वंग, १ रत्ती सिलाजीत, १ रत्ती वंसलोचन १ रत्ती सफेद इलायची, १ रत्ती सतगिलोय इन सबको पीसकर मिलाकर सहतमें खावै पहले वंगको दो रोज गुलाबमें घोट ले जाड़ेमें एक रत्ती वंग खावै गरमीमें आधी रत्ती खावै और हलदी सितावर वगेरा जो दवा लिखी है इनमें जिसका अर्क निकल आवै तो उसमें घोटे और आंच दे और जिसका अर्क नहीं निकले उसका काढा करके उसमें घोटकर आंच दे ।

अथ रांगखीलवालेकी क्रिया नं० ४९.

एक छटांक रांगा चमचेमें गलावै उसमें टके भर पारा डाल कर नीचे कुछ अरसेसे छोड़े जिसमें पतला

पत्र बन जाय उसके बाद दो कंडे बड़े आध आध गजके लेवै पहिले एक तह छोटे कंडोंकी गड्ढेमें बिछावै उसके ऊपर बड़ा कंडा रखै उसके ऊपर सवासेर शीशमका बुरादा बिछावै उसके ऊपर रांगके पत्र धरै ऊपरसे फिर सवासेर बुरादा बिछावै उसके ऊपरसे फिर दूसरे कंडेसे ढांक दे फिर उसको ऊपरसे एकतह छोटे कंडोंकी लगावै फिर आग देवै जब ठंडा होजाय तब संभाल कर खील चीनले जो कच्चा रहिजाय तो फिर दुबारा ऐसा ही करलेवै और शीशमके बुरादाकी जगह कड़वी खलमें और मेंहदीके पत्तोंमें बन जाता है बाकी सब वही क्रिया है यह ऊपरवालेसे किसी कदर कमजोर है एक रत्ती शहदके साथ खाय तो कुव्वतवा-हको फायदा करे और धातु पतली वन्द हो ।

अथ रांग शोधनविधि नं० ५०.

शुद्ध रांगऽ = आध पाव लेकर एक ठिकरेमें रखकर पिघलावै जब पिघल जाय तब शोरा टके भर डाल कर छुरीसे चलाता जाय जब कीचसा हो जाय तब फिर टके भर शोरा डालै इसीभांति ६ दफे शोरा डालै और कीचसा करै जबतक ठिकरेसे आग न निकलै तबतक करछुरीसे रगड़ता रहे जब आग निकलै तब शोराको जलजाने दे जब बुझे तब उतारै

छुरीसे खुरच कर महीन पीसकर एक पियालेमें डाल कर पानी डाल कर हाथसे मलदे राँग तले बैठि जायगा और पानी निकाल देय इसी भाँति तीनदफे करै फिर राँगको निकालदे कर सुखा लेय फिर बराबर हरताल मिलाकर कागजी निम्बूके अर्कमें एक पहर घोटै फिर शराव सम्पुट करके गजपुटमें फूँक देय फिर दशवां अंश हरताल डाल कर कागजीके अर्कमें घोटकर गजपुटमें फूँक देय इसी भाँति दश दफे दशवां अंश हरताल डालकर फूँका जायगा तब शुद्ध हो जायगा तथा भस्म होजयगा खुराक १ रत्ती वंसलोचन सफेद इलायची मोती चाँदीके वर्क इनके साथ शहतमें मिलाकर खावै पहिले राँग और मोती अर्क गुलाबमें तीन दिन खरल करले तो प्रमेहको धातु पुष्टको बहुत फायदा करेगा ।

कुमुदेश्वर रस नं० ५१.

पारा शुद्ध गंधक शुद्ध अवरख शुद्ध शिंगरफ शुद्ध मनसिल शुद्ध सारमनसल सबको पीसकर चौदह भावना सतावरके अर्ककी देय खुराक १ रत्ती सहत तथा शर्वत अनार तथा शर्वत नीलोफरमें खावै बुखारकी दाहमें तथा बुखार उतारनेको वंसलोचन सफेद इलायची मिलाकर दे खाँसीमें जक्ष्मातक २ मासे मिथ्री ५ काली मिच मिलाकर शहतमें खिलावै ।

दमैं मिलाकर खरल करे दो पहर भर फिर तांविके संपुटमें रखकर मूंज डालकर वनाई हुई मिट्टीसे खूब मजबूत संपुट करे फिर सुखा कर पांचसेर कच्चे जंगली कंडोंकी आंचमें फूक देय ठण्डा होने पर निकाले फिर चार मासे शिगरफ और चार मासे पारा मिलाकर अंडीके तेलमें खरल करे और पहिलेकी तरह आग देय ऐसी ही सौ पुट आंच देय हर दशवीं आंचमें तांविका नया और सम्पुट लगाता जाय तो सिद्ध होगा । मात्रा एक चावलभर अनुपानसे देय तो नामर्द मर्द होय पुष्टि और बहुत गुण करे । कंडे पाँच सेर कच्चे यानी अंग्रेजी तोल ।

अथ मण्डूर बनानेकी क्रिया नं० ५६.

लोहेकी कीटिको बहेडेकी लकड़ीके कोयलेमें लाल करके बहेडेकी लकड़ीके कठरेमें गोमूत्र भरकर सात दफे बुझाय देय फिर इमामदस्तेमें कूटकर कपड़-छान करके धोयकर साफ करलेय फिर त्रिफलेके काढेमें कड़ाईमें डाल कर तेज आंच देय उसके बाद खट्टेदही तथा मठसे ४ पहर घोटकर गजपुटमें आंच देय इसी तरह २१ आंच देय तथा जबतक लाल नहीं होवै आंच देता जावै आगे गजपुटका प्रमाण गढ़ा वारह गिरहका रखे यह दवा संग्रहणी तथा अतीसारकी

है । और बुखार तथा सूजनकी है खुराक १ रत्तीसे २ रत्ती तक माठेके साथ तथा शहतके साथ ।

अथ मूंगेके कुश्ताकी विधि नं० ५७.

मूंगा एक छटांक भर लेकर एकमलैयामें धीगुवारके पट्टेका गूदा नीचे भरै उसके ऊपरसे मूंगा धरै फिर मूंगेके ऊपरसे आधपाव गूदा धरे बादको मलैयाका सम्पुट करके गजपुटमें फूंक देय एक रत्ती पानमें या शहतमें खांसी बुखार और कुव्वतको नफा करताहै जियादा कुव्वतवाला करनाहो तो चटनी सितोपलाद जिसमें मोती और चांदीके वर्क मिलेहो उसमें खाना चाहिये। और मूंगेके कुश्तेको और अच्छाकरनाचाहेतो मूंगेके साखको तीनरोज पहिले कागजीअर्कमेंभिगोयदे

अथ मोतीके कुश्ताकी विधि नं० ५८.

मोती एक तोले धीगुवारके पट्टेका गूदा चार तोलेके बीच रखकर सरवासम्पुटकर चारसेर कंडोंकी आंचमें फूंक देय एक रत्ती चटनी सितोपलाद जिसमें मोती और वर्क चांदी मिलेहो उसके साथ देना चाहिये कुव्वतके लिये और द्विचकीकी बीमारीके लिये बहुतही अच्छी चीजहै ॥

अथ हीरा व चुन्नीमारण विधि नं० ५९.

जो हीरा सुख खिले तोसबसेअच्छाहै पहिलेहीरेको

दमें मिलाकर खरल करे दो पहर भर फिर ताँबेके संपुटमें रखकर मूँज डालकर वनाई हुई मिट्टीसे खूब मजबूत संपुट करे फिर सुखा कर पाँचसेर कच्चे जंगली कड़ोंकी आँचमें फूक देय ठण्डा होने पर निकाले फिर चार मासे शिगरफ और चार मासे पारा मिलाकर अंडीके तेलमें खरल करे और पहिलेकी तरह आग देय ऐसी ही सौ पुट आँच देय हर दशवीं आँचमें ताँबेका नया और सम्पुट लगाता जाय तो सिद्ध होगा । मात्रा एक चावलभर अनुपानसे देय तो नामर्द मर्द होय पुष्टि और बहुत गुण करे । कंडे पाँच सेर कच्चे यानी अंग्रेजी तोल ।

अथ मण्डूर बनानेकी क्रिया नं० ५६.

लोहेकी कीटिको बहेडेकी लकड़ीके कोयलेमें लाल करके बहेडेकी लकड़ीके कठरेमें गोमूत्र भरकर सात वफे बुझाय देय फिर इमामदस्तेमें कूटकर कपड़-छान करके धोयकर साफ करलेय फिर त्रिफलेके काढ़ेमें कढ़ाईमें डाल कर तेज आँच देय उसके बाद खट्टेदही तथा मठसे ४ पहर घोटकर गजपुटमें आँच देय इसी तरह २१ आँच देय तथा जबतक लाल नहीं होवें आँच देता जावै आगे गजपुटका प्रमाण गढ़ा बारह गिरहका रखेखूब दवा संग्रहणी तथा अतीसारकी

है । और बुखार तथा सूजनकी है खुराक १ रत्तीसे २ रत्ती तक माठेके साथ तथा शहतके साथ ।

अथ मूंगेके कुश्ताकी विधि नं० ५७.

मूंगा एक छटांक भर लेकर एकमलैयामें घीगुवारके पट्टेका गूदा नीचे भरै उसके ऊपरसे मूंगा धरै फिर मूंगेके ऊपरसे आधपाव गूदा धरे बादको मलैयाका सम्पुट करके गजपुटमें फूंक देय एक रत्ती पानमें या शहतमें खांसी बुखार और कुब्बतको नफा करताहै जियादा कुब्बतवाला करनाहो तो चटनी सितोपलाद जिसमें मोती और चांदीके वर्क मिलेहों उसमें खाना चाहिये। और मूंगेके कुश्तेको और अच्छाकरनाचाहेतो मूंगेके साखको तीनरोज पहिले कागजी अर्कमें भिगोयदे

अथ मोतीके कुश्ताकी विधि नं० ५८.

मोती एक तोले घीगुवारके पट्टेका गूदा चार तोलेके बीच रखकर सरवासम्पुटकर चारसेर कंडोंकी आंचमें फूंक देय एक रत्ती चटनी सितोपलाद जिसमें मोती और वर्क चांदी मिलेहों उसके साथ देना चाहिये कुब्बतके लिये और द्विचकीकी वीमारीके लिये बहुतही अच्छी चीजहै ॥

अथ हीरा व चुन्नीमारण विधि नं० ५९.

जो हीरा सुख खिले तोसबसे अच्छाहै पहिले हीरेको

अथ सार (लोहा) की पहली विधि नं० ५२.

शुद्ध लोहेका चूर्ण बारह पैसेभरले शिंगरफ एक पैसे भर दोनों घीगुवारमें दोपहर घोट्टे फिर चार टिकिया बनावै सरवा सम्पुट करके चारसेर कंडोंकी आँच दे इस प्रकार सात आँच दे तो भस्म होगा, हर आँचमें शिंगरफ पैसेभर डालता जाय यह सार अक्सर दवा-ओंके जोगमें डालनेके काम आता है ।

अथ सारकी दूसरी विधि नं० ५३.

लोहा बारह पैसेभर, मनशिल पैसेभर घीगुवारके रसमें दोपहर घोट कर सात टिकिया बनावै सरवा सम्पुट कर दो सेरकंडोंकी आँच देय ऐसेही बारहरोज आँच देय तो भस्म हो, हर आँचपर मनशिल डालता जाय, कुलदवामें यही शामिल किया जाता है। कफकी खासीमें पीपल या पानके साथ अथवा शहतके साथ देवै । बुखारको मुनका भून कर उसमें रखकर एक घंटा पहिले दिया जावै अगर खुश्कीहो तब कासनीके पत्ते फाडकर उसमें शकंजवी दारमी डाल कर उसके साथ दिया जावै । साँसको पीपलके साथ दिया जावै । बुखार और खुश्कीकी हालतमें शरवत नीलोफरके साथमें दिया जावै ।

अथ सारकी तीसरी विधि नं० ५४.

असली फौलाद रेत कर शुद्ध आठ तोलेमें आठ मासे पारा डालै फिर शराबमें दो पहर बराबर खरल करै रुकै नहीं वादको सरवा सम्पुट कर कपडोटी करके पात्र भरकं ढोंकी आंचमें फूंकदे ठंढा होनेपर निकालै फिर आठ मासे पारा डालै शराबमें पहिलेकी तरह खरल करै और आंच देवै इसीतगह अस्सी आंच देवै और हर दशवीं आंचमें सरवा नये बदलता जाय । फिर उसमें सफेद संखिया चार माशे मिलाकर शराबमें पहिलेकी तरह खरल करै और आंचदे ऐसी इक्कीस आंचदे हर पुटमें संखिया डालता जाय । फिर आतशी शीशीमें भर मुखबन्द कर गेहूँके कोठेमें इक्कीसदिन दबा रखे फिर निकालै रंग नारंगीके समान होगा, मात्रा चावल भर है पूस, माघमें खाय। सात रोज खानेसे बल खूब बढ जायगा । जितनाही पुराना होगा उतना ही अधिक गुण करेगा । और इस फौलादको दो साल तक चूल्हेके नीचे गाड़ा रखे जिसमें हरवक्त आग जलतीहो तो गुण अधिक हो जायगा अनुपान जो चंद्रोदयका है वही इसका है ।

अथ सारकी चौथी विधि नं० ५५.

फौलाद रेत कर चार तोलेमें चार माशे शिगरफ मिलावे फिर कुक्कुटके अंडेका तेल निकालकर फोला

कटैया जिसमें भटेकी तरह फल आताहै उसकी जड़ पावभर कूट कर उसमें रखकर गजपुटमें सम्पुट करके आंच देय बादको घोडेकी पेशावमें २१ बार बुझावै, उसके बाद लोहेके खरलमें खूब बारीक करै पत्थरका खरल घिस जाताहै जब खूब बारीक होजावै तब चाहै और खरल पुस्तामें डाल लेय एक तोले हीरा, दो तोले शिगरफ शुद्ध और वन अंजीरके दूधमें तीन रोज खरल करै जो दूध कम मिलै तो उसके जड़की छाल कूटकर अर्क निकाल लेवै उसमें खरल करै फिर एक रोज आकके दूधमें खरल करै फिर एकरोज कपास नरमाके अर्कमें खरल करै फिर एक रोज सेउड़के दूधमें खरल करै बादको गोला बनालेवै और तफसीलजैल दवाइयोंको इकट्ठा कर उनमें रख कर गजपुटकी आंच देय (दवा गोला बनानेकी)

१ मेंढेका सीग ४ तोले, २ कछुआकी पीठ ४ तोले, ३ हाथीदांत ४ तोले, ४ कनैरकी छाल ४ तोले, ५ सोना-मक्खी शुद्ध १ तोले ६ मेंढासिंगी ४ तोले, इन दवाइयोंके दो हिस्से करै एक हिस्सेमें गूलड़का दूध ८ आठ तोले उसके मिल जाने पर आकका दूध ८ आठ तोले डाल कर खरल करै एकरोज दूसरे रोज २ सेउड़का दूध डाल कर खरल करै उसके अन्दर हीराका गोला रखकर सम्पुट पुस्ता करके गजपुटमें फूँक देय ठंडा होनेपर निकाल

लेवें इसके बाद निरुफ हिस्सा जो दवा बाकी है उसको अक्वल तरकीबसे खरल करे हीरेको औरतके दूधमें खरल करके गोला बनाकर खुश्क करके निरुफ हिस्सा दवामें रखकर गजपुटमें फूंक देय हीरा खाक हो जावैगा चुन्नी भी इसी तरह बनाई जावैगी जो फायदा हीराके है वह होंगे नामदीको शिगरफ एक चावल जो संखिया मिला हुआ आगे लिखा जायगा और दो चावल हीरा मिलाकर मक्खनमें खिलावें ४० चालीस रोज तक अच्छा होजावैगा ।

अथ लक्ष्मीविलास रस नं० ६०

१ अवरख १पल, २रसराज १० माशे ३ गन्धक १० माशे, ४ भांग २५ दाम, ५ धतूरेके बीज २५ दाम, ६ विधारा २५ दाम, ७ सौंफ २५ दाम, ८ विदारीकन्द २५ दाम, ९ जायफल २५ दाम, १० गुलसकरी २५ दाम, ११ गंगेरण २५ दाम, १२ शतावर २५ दाम, १३ गोखरू २५ दाम, १४ जावित्री २५ दाम, १५ कपूर २५ दाम ।

इन पन्द्रहों चीजोंको पीसके पानीमें चार रत्ती गोली बांधे इसके खानेसे सन्निपात, वातपित्त रोग अठारह प्रकारके रोग कोढ़के और बीस प्रकारके प्रमेह जाँय नाड़ी व्रण और गुदाके रोग भगन्दर श्लीषद गुल्म अतीसार अन्तर वृद्धि पीनस छर्दि अर्शमेद आ-

उतार लेय और शीशीको वालूयंत्रमें छे पहरकी आंच देय तब बन जाताहै वाकी सब वही ऊपरकी क्रियाहै इसमें गुण अधिक होताहै खून बढ़ाने और बुखार और भूखको एक रत्ती शहदके साथ खाय । और धातु पुष्ट और प्रमेहके वास्ते वंसलोचन सफेद इलायची और सतगिलोयके साथ खाना चाहिये ।

अथ नागरसहकीमदुर्गाप्रसादवाला नं० ६४.

गेहू दो तोले सेलमखरी दो तोले मोती सच्चे दो माशे इन सबको खरलमें सुरमेकी तरह वारीक पीसलेवै बुखारके वास्ते कासनी फाड़कर एक सफेद इलायची मिलाकर दो रत्ती दवा शिकंजवी दारमीमें डालकर देना चाहिये जो बुखारकी गर्मी जियादा होय और किसी वजहसे खुश्की जियादा हो तो दो रत्ती दवा एक सफेद इलायचीमिलाकर शर्बत नीलोफर या शिकंजवी दारमी या शहदमें देना चाहिये पेचिश और खांसी खुश्कमें लऊकसीपिस्तांके साथ देना चाहिये और खून किसी जगहसे आता हो तो वंसलोचन और सफेद इलायची मिलाकर अर्क अनारके साथ खिलावे तो फौरन खून वन्द हो जावैगा ।

अथ शोराका कुश्ता नं० ६५.

कंडोंकी उखली बनावै कि जिसमें दवा आ जाय शोरा

छटांक भर भाँग पावभर नकछिकनी सूखी पाव भरले पहिले उखलीमें आध पाव भाँग रक्खै फिर आध पाव नकछिकनी रक्खै उसके ऊपर शोरा रक्खै फिर उसके ऊपर नकछिकनी रक्खै उसके ऊपर भाँग रक्खै फिर दो तह कंडोंकी तले और दो तह ऊपर रखकर फूंक देय भस्म होजायगा रंग सफेद होगा सुजाकमें पानमें रखकर खावे सेहत होगी ।

अथ संग्रहणीकपाटरस नं० ६६.

शुद्ध गन्धक शुद्ध पारा अभरक शिंगरफसार जाय-फल बेलगिरी मोचरस सिंही मुहरा अतीस सोंठि कालीमिर्च पीपल धायके फूल घृतमें सिकी हर्ड कैथ अजमोद चित्रक अनारदाने इन्द्रयव धतूरेके बीज गजपीपल अफीम इन सबको बराबर लेय पहिले पारे गंधककी कजली करलेय फिर पोस्तके छिकलेके रसमें मिर्च बराबर गोली बनावै अतीसार संग्रहणीको दही या मठमें या अर्कबेलके साथ देनेसे बहुत नफा होताहै ।

अथ क्षुधासागर रस नं० ६७.

सोंठि कालीमिर्च पीपल त्रिफला पांचो नोन भुना सुहागा जवाखार सज्जी पारा शुद्ध गन्धक शुद्ध सिंही मुहरा ये सब बराबर ले पहिले पारे गंधककी कजली

मवात उदर रोग क्रस्ता कान नाक मुख जीभ
रोग गलग्रह शिरशूल स्त्रीरोग सब जाँय (अनूपान)

मांस संग मिथ्रीसंग मट्टासंग जलसंग सुरा संग
खाय तो वृद्ध भी तरुण होवै सौ स्त्रियोंसे भोग करै
धातु बढे शरीर पुष्ट करै ।

अथ कुश्तासंगईसव नं ६१.

अव्वल टुकडे करके संग ईसवके अर्क केवड़ा और
अर्क गुलाब और अर्क वेदनुशकमें सौ सौ हफे आगमें
गरम करके बुझाया जावै उसके बाद केवड़ा अर्क
अर्क गुलाब और अर्क वेद मुश्क तीनोंको मिलाकर
चालीस रोजतक खरल करै उसे खुश्क कर शीशेमें रख
लेवै खुराक एक रत्ती मक्खनमें मिलाकर खावै खुश्की
और गर्मीकी बीमारीको मुफीद है दिलको ताकत देता है
ऊपरसे दूध पीना चाहिये और दिल दिमागकी ताक-
तके लिये १ रत्ती सफेद इलायची वंसलोचन मिलाकर
शहदमें खावै ऊपरसे अर्क वेदमुश्क दो तोला पिया
जावै दिल धड़कनेके वास्ते बहुत फायदा करता है ॥

अथ कपूरभीमसेनी नं० ६२.

१ शोरा कलमी २ तोले, २ लाल चन्दन २ तोले ३
सफेद इलायचीके दाने २ तोले, ४ कवावचीनी २
तोले, ५ रतनजोता १ तोले ६ केसर ८ माशे, ७ पोदी-

नेका सब ८१ माशे, ८ कपूर ४ तोले, ९ गुलाबका अर्क १० तोले ।

इन सब दवाओंको अलग २ पीस कर फिर सबको मिलाकर पीसले गुलाब डाल कर, थोड़ा गुलाब रहने देय टिकिया बनाकर फूलकी थालीमें रखै ऊपर फूलके कटोरेसे ढँककर आटा लगाकर तले मोटी बत्ती से घीका दीवा जलाकर कपूर उडालेय फिर रहि जाय तो गुलाब डालकर टिकिया बनाकर उडालेय आँखके वास्ते फायदा करताहै और जियादा कीमतका बनाना चाहै और जमाना चाहै तो इस प्रकार दवा मिलावे कौदागोद अथवा वनूलका गोंद १ एक तोले, कस्तूरी ८ माशे, अम्बर ६ माशे, इनको पीसकर मिलाके जमाले।

अथ मृगांककी विधि नं० ६३.

शुद्ध रांग एक छटांक भर शुद्ध गंधक छटांक भर शुद्ध पारा छटांक भर नोसादर छटांक भर पहिले पारा गंधककी कजली करे फिर सब दवाको मिलाकर खूब वारीक सुरमेकी तरह पीसे फिर घेला भर शोरा मिला कर आतशी शीशीमें भर कर कोयलोंमें रख कर दो सूपसे चारों तरफ धौके कीलसे मुँह शीशीका खोलता जाय बंद न होने पावे जब रंग सुख लूका निकले और कीलमें दवाका रंग मिम्ल सोनेके चमकदार होजावै तब

करै फिर अदरक रसेमें सात पुट देय रत्तीभरकी गोली वनावै एक गोली लौंगके काढेमें देय तो हैजा और अजीर्ण दूरहों जिस कदर सेहत होवै उसी कदर दवा देरमें देवै पेट और पसलीके दरदको भी दूर करताहै और हाजमेंकी कुव्वत ज्यादा करता है ।

अथ रसकपूरकी विधि नं० ६८.

शिंगरफसे निकाला हुआ शुद्ध पारा, गेरू, पुरानी ईटकी सुखी, खरिया मिथ्री, फिटकरी, सेंधानोन, वांवीकी मिट्टी, खारीनोन, कविस मिट्टी इन सबको अलगर कपडछान करके फिर पारेको एक एक दवाईमें दोदो पहर खरल करै जिस दवाईमें खरल करै उसी समय फिर दूसरी दवाईमें दो पहर खरल करै ऐसेही सब दवाइयोंमें खरल करके फिर डमरूयंत्रमें ३२ पहरकी आंच देय चार लकड़ियोंकी, पारेमें एक एक दवा डालता जावै और दो दो पहर खरल करता रहै खुराक दो चावलसे एक रत्ती तक आतशक तथा कोढ़का तथा जिस कदर खूनकी बीमारी हों सबको दूर करता है । छोटीसी खांडकी टिकिया वनाकर उसमें दवा रखकर निगल लेना चाहिये यह दवा सुंहमें नहीं लगना चाहिये क्योंकि किसी किसीके मसूडे सूज जातेहैं और ताकतके वास्ते तथा खफीफ खूनके विकारके वास्ते

चन्दन सफेद घिसा हुआ लौंग वंसलोचन सफेद इलायची इन सबको दवाके बगवर मिला कर गोली बनाकर दूधके साथ खावै परहेज गुड़ तेल मिर्च खटाई नहीं खाना चाहिये और आतशक कोढ़ बगैरावालेको फकत चनेकी रोटी और घी बगैर निमक और मीठेके खाना होगी ।

अथ सोनामक्खी शोधनविधि नं० ६९.

तीन ३ पैसे भर सोनामक्खी और एक पैसा भर सेंधानोन दोनोंको जर्मीरेके अर्कमें तथा विजौरेके अर्कमें आँचके ऊपर कढ़ाईमें घोंटे करछुलीसे जवतक सुखे न होवै तवतक घोंटे जाय जव सूख मुख होजाय तब जानो शुधगई अगर सेंधानोन नहीं डाले तो भी कुछ हरज नहीं ।

अथ सोनामक्खी मारणविधि नं० ७०.

शुद्ध सोनामक्खी चार ४ पैमेभर, गन्धक एक १ पैसे भर अंडीके तेलमें एक १ पहर घोटकर सरवेका सम्पुट करे और ऊपरमे सरवेमें छेद करदेय और २ दो सेर कंडेकी आंच देग निद्ध होजायगी ।

अथ मूत्रकृच्छ्र नं० ७१.

वंगपारा शुधी गन्धक इन मनको लोहके पात्रमें खरल

करै एक१ रोज सफेद दूबके अर्कमें घोटै एक रोज सुरै-
ठीके काढेमें एक रोज गोखरूके रसमें एक रोज सेमरके
रसमें खरल करै फिर मूषामें रखकर भूधरयंत्रमें फूक
देय फिर पूर्वाक्त रसोंमें खरल करके तीन रत्ती रस सफेद
दूब सुरैठी सेमरके रसमें दे और दूधकी खीरके साथ
देय तथा प्रातःकाल शीतल जलके साथ देय एक खुरा-
कमें दरद जाता रहेगा मूत्रके होतेही मनुष्य सुखी होवे ।

अथ वज्रमूषा बनानेकी क्रिया नं० ७२.

दो भाग तिनकोंकी राख एक भाग बांवीकी मिट्टी
एक एक भाग लोहेकी कीट एक भाग सफेद पत्थरका
चूरा कुछ मनुष्यके बाल सबको वकरीके दूधमें औंदाय
दो पहर अच्छी तरह घोटै बादमें मिट्टीकी गौंके थनके
समान मूषा बनावै और उसीका ढकना बनावै दवा
बंद करके ढकना बंद कर उसी मिट्टीसे उसकी संधें
बन्द करदेय ।

अथ भूधरयंत्र नं० ७३.

मूषेको बालूसे ढँककर ऊपरसे कंडोंकी आंच देदेय
यह दवा रसरजसुन्दरसे देखकर लिखी तत्काल फल
दिखलातीहै परीक्षा करके देखली हमने तजरवा किया ।

अथ शीशा मारनविधि नं० ७४.

शुद्ध शीशेके चनेके दालके बराबर टुकड़े कर आठ
तोले लेकर उसमें एक तोले मनसल डाल कर चोला-

ईके अर्कमें एक पहरभर घोटै फिर अडूसेके काढेमें एक पहर घोटकर टिकिया बनाय घाममें सुखाकर शराव सम्पुटे करके गजपुटमें फूँक देय इसी तरह सात आंच देय भस्म होगा रंग काला होगा यह पेशावकी मर्जमें जीर्णज्वरमें और ताकतके लिये काम आताहै ।

अथ मृतसंजीवनीवटीरससन्निपातपरनं० ७५.

शिगरफका पारा शुधी दोर टंक गन्धक शुधी तीन ३ टंक तांबेश्वर चार टंक सुहागा शुधी दो टंक सिंही-मुहरा शुधी एक टंक काली मिर्च चार टक पारा गन्धककी कजली करै फिर सब दवा डाल कर खरल करै ब्राह्मी रसकी एक पुट देय अदरककी दो पुट देय और सोंठि मिर्च पीपल ओटाय उसके रसकी एक पुट देय फिर एक रत्तीकी गोली बनावै अदरकके अर्कके साथ खावै सन्निपात और मूर्च्छा दूर होय आमवात वायशूल विषमज्वर दूर होय ।

अथ पारामारण नं० ७६.

पारा १ एक तोला और तेजाव गन्धकका पांच ५ तोला एक कुल्हैयामें पारा और तेजाव भरकर थोडेसे कंड़े अलहदा सुलगादे जब धुँआ निकल जावे तब उस कुल्हैयाको कड़ों पर रखदे पारा खील होजावे तब उतार ले पारा सफेद खील होजायगा ।

अथ पारा शोधनविधि वैद्यदर्पणकी रीतिसे नं० ७७.

पहिले अमलतासके गूदेके काढेमें दो २ रोज घोटै तो मल दोष दूर होय । फिर चीताके रस या काढेमें दो २ रोज घोटै तो अग्निदोष दूर होय । फिर ढेला यानी अंकोलके बकलेके रसमें दो २ रोज घोटै तो विष दोष दूर होय । फिर घीगुवारके रसमें दो रोज घोटै तो सात कैचलियांका दोष दूर होय यह क्रिया मर्दनसंस्कार है । तिसके पीछे फिर डमरूयंत्रमें उड्डालेय । जब पारा मर्दनसंस्कारसे शुद्ध होजाय तब पारेको भूखा करनेके वास्ते और परतोड़नेके वास्ते और मुखकरनेके वास्ते और उपाय करै जो नौ ९ विषहैं उनमें शोधन करै वह विष ये हैं । वत्सनाग १ हरिद्रक जो हलदीमें होताहै २ शक्रतुक ३ प्रदीपन ४ सौगष्टक ५ शृंगक (सिद्धिया) ६ कालकूट ७ हालाहल ८ ब्रह्मपुत्र ९ और सात उपविष ये हैं आकका दूध १ सेहुड़का दूध २ कलिहारी ३ कनैर ४ घुँगुची ५ अफीम ६ धतूरा ७ इन सबोंमें सात सात दिन घोटै फिर डमरूयंत्रसे उड्डालेय फिर लूनीयां १ शूभा २ जलपीपल ३ कुकरोंदा ४ इन सबमें सात सात दिन घोटै धूपमें सुखाय सुखाय धोयता जाय धोवै नहीं कुकरोंदा आदिका अर्क निकाल कर डोला

यंत्रमें पकावै चार४ पहरतक आंच दीवाकी लूकीसमा-
न करै और चारों दवाइयोंका रस आध आधसेर एक
१सेर पारेके लिये लेना चाहिये और डोलायंत्रके पका-
नेसे जो रस बाकी रहे उसमें उसी पारेको खरलमें
डाल कर घोटते घोटते सुखा लेय फिर डमरूयंत्रसे
उडालेय फिर उसी पारेको पूर्वोक्त रीतिसे औषधि-
योंके रसमें फिर मर्दनसंस्कार हे सो चौदह१४ रोजतक
करै इससे बहुत गुण होतेहैं फिर इसी भांति उत्थापन
संस्कार करै पारेको घाममें सुखाय कर खरलसे नि-
काल लेय फिर नपुंसकत्व करनेकेलिये स्वेदनसंस्कार
करै सेंधानोंन१ सोंठि२ मिर्च३ पीपल४ मूलीके बीज ५
अदरक राई ये सब दो २ छदामभर लेकर कांजीके
पानीसे पीसकर चार तह कपड़ाकी करके उसपर
लेप करै उस पारेको उसी कपड़े पर रखकर पोदली
बांध कर हांडीमें लटका देय और कांजीका पानी १५
पंद्रह सेर डाले तीन दिन धीमी २ आंच देकर स्वेदन
करै इस क्रियाके करनेसे पारेमें दीपनशक्ति होतीहे और
धातुको खाताहे फिर एक हांडीमें पारा रखै और का-
गजी निवृका अर्क डालै १ एक दिन घाममें राखे फिर
निकाल लेय फिर उस पारेको तौले जो पारा १६ सो-
लह पैसे भर होय तो नैनियाँगन्धक शुद्ध सोलह १६
पैसे भर डालै एक १ दिन घोट कर कजली करै उस

कजलीको गूमा और जल पीपलके रसमें २ दिन घोटै जब सूख जाय तब एक १ सेरकी एक बड़ी शीशीमें डालै और उस शीशीमें पहिले एक कपड़ौटी कर लेवै फिर धूपमें सुखाय शीशीको एक हांडीमें रखै और हांडीके नीचे पैसा बराबर छेद करे चौगिर्द मिट्टी लगावै तिसपर शीशी रखै तब वालू डालै हांडीके गले तक शीशीकी गर्दन वालूसे बाहर निकाले रहै और आठ पहर आंच देय दो लकड़ीकी चार पहर धीमी आंच देय फिर दूसरी चार पहर तेज आंच देय जब आपसे शीशी शीतल होय तब फोड़के पारेकी चांदी निकाल ले उस चांदीके पीछे जो गन्धक राख लगावै तिसको छुरीसे दूर करे फिर उस चांदीको खरलमें डाल कर पीसे फिर गूमी और गजपीपलके रससे एक दिन घोटै जब सूखै तब पूर्वोक्त प्रकारसे शीशीमें डाल वालूयंत्रमें शीशीको रख चार पहरमन्द आंच देय जिससे अवशिष्ट गन्धक जल जाय गन्धकके जलेकी परीक्षा करे पहले पहर परीक्षा न करे दूसरे पहरसे लेकर तीन पहर तक परीक्षा करे ।

चन्द्रप्रभागूगल वैद्यदर्पणके मतसे नं० ७८.

१ कंचूर ४ मासे २ वच खुरासानी ४ मासे ३ मोथा ४ मासे ४ चिरायता ४ मासे ५ देवदार ४ मासे ६

हलदी ४ मासे ७ अतीस ४ मासे ८ भारंगी ४ मासे
 ९ पीपलामूल ४ मासे १० चीता ४ मासे ११
 धनिया ४ मासे १२ आँवला ४ मासे १३ हर ४ मासे
 १४ बहेड़ा ४ मासे १५ चाव चार मासे १६ वाय-
 विडंग ४ मासे १७ गजपीपल ४ मासे १८ सोंठ ४
 मासे १९ पीपल ४ मासे २० मिर्च ४ मासे २१ सो-
 नामवखीकी भस्म ४ मासे २२ सजी ४ मासे २३ ज-
 वाखार ४ मासे २४ सेंधा नोन ४ मासे २५ विड़नोन
 ४ मासे २६ काला नोन ४ मासे २७ निसोत १६
 मासे २८ दातीनकी जड़ १६ मासे २९ पतरज १६
 मासे ३० तज १६ मासे ३१ सफेद इलायची १६
 मासे ३२ वंसलोचन १६ से३३ साग३२ मासे ३४
 मिथ्री ६४ मासे ३५ सत सिलाजीत १२८ मासे ३६
 गूगलभैसा ११८ मासे सब दवाई कपड़छान करके गूगल
 सिलाजीतका सत और मिथ्री तीन छटाक त्रिफलेका
 काढ़ा करके उसमें चढ़ावै जब गाढ़ा होय तब पहिले
 सार डाले पाछे सब चूर्ण डाले तब फिर आठ पैसे
 भर घी गरम गरम करके डाले एक चिकने बरतनमें धर
 रखे पहिले हफ्ते मिजाजके माफिक जैसा माफिक
 आवै मीताज वेद्यके अधीन है श्रमेह मूत्रकृच्छ्र मूत्रवन्ध
 कोष्ठवन्ध पेटका फूलना कवजी लिंगकी गांठ मासकी
 जो देहमें पड़ी होय अंडवृद्धि आंधीपीर्ष कमरशूल

काँससुआस छई खुजली स्त्रीका रजोदोष स्त्रीका रज जो वंदं होय तो खुल जावै आदमीका शुक्र दोष दूर हो भोजन करनेसे पहिले खाय ॥

शिंशुगण्ड नं० ७९.

शिंशुगण्ड शुद्ध काले धतूरेके बीजकंतेलमें २१ इकीस दफे खरल करै हर दफेमें आध पाव बीज धतूरेके सरवेमें ऊपर रखवै और आध पाव बीज धतूरेके नीचे रखकर सम्पुट करके ऊपर सात कपडौटी करके सुखाले ५ पांच सेर भूवलकी आँचदे ज्यादा गरम न हो जिसमें बीज न जलने पावै खरल हर दफे ५ पांच घंटे होना चाहिये खुराक १ रत्ती पान या मलाई या मक्खनके साथ खावै नामर्दके वास्ते और बायेके वास्ते रासनाके काढेके साथ देः।

दवा चन्द्रोदय नं० ८०.

पारा शुद्ध २० बीस तोले गन्धक शुद्ध २० तोले गन्धक शोधनेकी विधि पियाजके रसमें ४१ दफा शोधे । गन्धक और पारेको मिलाकर १ एक घोट्टे वादको घीगुवारका रस डाल कर ४ पहर घोट्टे खरल में घोटकर सुखाले धूपमें नहीं रखवे सुखलाकर आतशी शीशीमें भरदे शीशीका मुँह बन्द करके सात कपडौटी करे वालूयंत्रमें रखकर १२ बारह पहरकी

आंच दे वादमें शीशीमेंसे दवा निकाल कर फिर २० बीस तोले गन्धक मिलाकर ऊपरकी तरकीबसे घोटकर सुखलाकर शीशीमें भरकर वालूयंत्रमें १६ पहरकी आंच दे इसीतरहसे सात शीशी इसी दवाकी गन्धक मिला मिला कर ऊपरकी तरकीबसे घोट घोट कर चढाई जावेंगी लेकिन आंच हर एक शीशीकी ४ चार पहर ज्यादा बढ़ाई जावेंगी यानी पहिली शीशीकी आंच १२ बारह पहर दूसरी शीशीकी आंच १६ सोलह पहर तीसरी शीशीकी आंच बीस २० पहर चौथी शीशीकी आंच २४ चौबीस पहर पांचवीं शीशीकी आंच २८ अट्ठाईस पहर छठी शीशीकी आंच ३२ बत्तीस पहर सातवीं शीशीकी आंच छत्तीस ३६ पहर इसी तरह बनाया जावेगा इसका रंग सुख बानातकी तरह होगा और १ तोले चांदीमें १ मासे दवा डाली जाय तो सोना हो जायगा और खानेकी खुराक ३ एक चावल पानमें या मलाईमें या मक्खनमें या सफेद इलायची पीसकर उसके साथ दवा फांकले दवा खानेके बाद १ घण्टे तथा २ घण्टे बाद दूध मिथी डाल कर पिये नामर्द मर्द होंगे जिसके पुत्र पैदा न हो उसके पुत्र पैदा हो और रोगोंमें अपनी बुद्धि अनुसार वरते ।

॥ श्री३नमः ॥

अथ कुमार आसव (वैद्यदर्पणका) नं० १.

१ घीगुआरका रस	सेर १२
२ गुड	सेर ४
३ मधु	तोले ६६ मासे ८
४ लोहचूरण	" ६६ मासे ८
५ सोंठ	मासे १६
६ मिर्च काली	" १६
७ लोंग	" १६
८ तज	" १६
९ पत्रज	" १६
१० इलायची सफेद	" १६
११ नागकेसर	" १६
१२ चीता	" १६
१३ पीपल	" १६
१४ पीपलामूल	" १६
१५ वायबिडंग	" १६
१६ गजपीपल	" १६
१७ चाव	" १६
१८ कंकोल	" १६
१९ धनियां	" १६

२० सुपारी	माशे १६	३३ पुइकर मूल माशे १६
२१ कटुकी	" १६	३४ बीजवन्द " १६
२२ मोथा	" १६	३५ कंधीके बीज " १६
२३ आमला	" १६	३६ सैधानोन " १६
२४ हर	" १६	३७ किमाचकेबीज " १६
२५ बहेडा	" १६	३८ गोखरू " १६
२६ रासना	" १६	३९ सौंफ " १६
२७ देवदारु	" १६	४० हींग " १६
२८ हल्दी	" १६	४१ उटंगनके बीज " १६
२९ दारुहल्दी	" १६	४२ गदासांठिदोनों " ३२
३० भारंगी	" १६	४३ लोध " १६
३१ मुलैठी	" १६	४४ सुवर्णमाखीकीभस्म १६
३२ दातुन	" १६	४५ धायकेफूल तोले २१-४

इन सब दवाइनको कूटिके घीगुआरके रसमें डालें और मटुकामें भरदे मटुकाके मुँहपर पहिले सरवा रखकर फिर ऊपरसे तीन पत्ते अरण्डके रखकर फिर चार तह कपडा बाँधकर फिर ऊपरसे कपडमिट्टी फरदे फिर मटुकेको ४० दिन लीदमें गाड़ दे फिर निकालकर छान ले माँताज ४ माशेसे ३२ मासेतक भुखके वास्ते रोटी खानेसे पहिले उसको पीकर ऊपरसे रोटी खावे और पेटके दर्दके वास्ते जवाखार खाव नकटिक

नीका खार मिलाकर ६ मासे अर्क १ मासे जवाखार मिलाकर देवै जियादाः दर्द हो तो १ तोले अर्क दो मासे खार देवै वायका दर्द हो तो सुबह शाम पिलावे जिसकदर मुवाफिक आवै, उसमें सिर्फ नमक सेंधा पड़ैगा खार नहीं बवासीर सूनी और वादी दोनोंको सेवन करनेसे नफा करताहै ।

अथ द्राक्षादि आसव नं० ८२.

१ मुनक्का	पल १००	८ जावित्री	पल १
२ मिथ्री	" ४००	९ चातुजात	" ४
३ वेरकीछाल	" ५०	१० त्रिकुटा	" ३
४ धायकेफूल	" २५	११ हमीमस्तंगी	" १
५ सुपारी	" १	१२ अकरकरा	" १
६ लौंग	" १	१३ कूट	" १
७ जायफल	" १		

इन सबका चूरण करके इनसे चौगुणा जल डाल मटकेमें भर घोडेकी लीदमें जमीनमें गाड देय १५ दिन तक बाद निकालके भबर्केमें अर्क खींच लेय भबर्केमें इतनी दवा पोटली बाँधकर और डाल देय ॥

१ कपूर	पल १
२ केसर	पल १
३ कस्तूरी	मासे ४

इस भाँति पोटली डाल कर अर्क खींच लेय और प्रातःसमय २ पल मध्याह्नमें २पल सन्ध्यासमय ३ पल इस भाँति खाय इसपर बहुत गरिष्ठ भोजन करै तथा स्निग्ध भोजन करै तो वीर्यकी वृद्धि होय और अधिक काम बढे और खांसी स्वांसके वास्ते सुबह शाम पिलावै जिस कदर मुवाफिक आवै और जिसमके वायु-के दरद वालेको सुबह शाम पिलावै जिस कदर मुवा-फिक आवै एक माशासे छटाँक भर तक पिया जावै ।

अथ लघु विपगर्भतैल नं० ८३.

१ धतूरेके बीज व पत्तोंका अर्क तोले	२१	४
२ वकायनके पत्तोंका अर्क	"	२१ ४
३ आकके पत्तोंका अर्क	"	२१ ४
४ नीमके पत्तोंका अर्क	"	२१ ४
५ असगन्धके पत्तोंका अर्क	"	२१ ४
६ संजनेके पत्तोंका अर्क	"	२१ ४
७ अरण्डके पत्तोंका अर्क	"	२१ ४
८ मकोयके पत्तोंका अर्क	"	२१ ४
९ सेहुँड़के पत्तोंका अर्क	"	२१ ४
१० सिंधियाविष	"	२१ ४
११ सांठ	"	मासे ८

नीका खार मिलाकर ६ मासे अर्क १ मासे जवाखार मिलाकर देवै जियादाः दर्द हो तो १ तोले अर्क दो मासे खार देवै वायका दर्द हो तो सुबह शाम पिलावै जिसकदर मुवाफिक आवै, उसमें सिर्फ नमक सेंधा पड़ेगा खार नहीं बवासीर खूनी और बादी दोनोंको सेवन करनेसे नफा करताहै ।

अथ द्राक्षादि आसव नं० ८२.

१ मुनक्का	पल १००	८ जावित्री	पल १
२ मिथ्री	" ४००	९ चातुजात	" ४
३ वेरकीछाल	" ५०	१० त्रिकुटा	" ३
४ धायकेफूल	" २५	११ हमीमस्तंगी	" १
५ सुपारी	" १	१२ अकरकरा	" १
६ लौंग	" १	१३ कूट	" १
७ जायफल	" १		

इन सबका चूरण करके इनसे चौगुणा जल डाल मटकेमें भर घोड़ेकी लीदमें जमीनमें गाड़ देय १५ दिन तक बाद निकालके भबकेमें अर्क खींच लेय भबकेमें इतनी दवा पोटली बाँधकर और डाल देय ॥

१ कपूर	पल १
२ केसर	पल १
३ कस्तूरी	मासे ४

अथ अर्कजंभीरी नं० ८४.

१ अर्कजंभीरी सेर	५	७ अजवाइन	"	३
२ हींग भुनी तोले	५-४	८ लोंग	"	३
३ पीपल तोले	३	९ वायविडंग	"	३
४ मिर्च काली	"	१० नोन काला	"	२४
५ सोंठ		११ नोन सेंधा	"	३
६ राई				

इन सब दवाइनको कूट कपड़ छान कर फिर अर्क जंभीरीमें मिलाय देय फिर घीके वरतनमें २१ रोज घोडेकी लीदमें गाड देय फिर निकालकर छान-लेय पेटके दरदको और वदहाजमेंको बडा फायदः करताहै मौताज अर्क ४ मासेसे १ तोले तक और जो अर्क छान कर दवा बचे उसको पीसकर दो चने बराबर गोली बनालेय वह भी मुताबिक अर्कके फायदा करेगी और अक छान कर चीनी या कोंचके वरतनमें रखे और १५ रोजतक पहिले धूपमें रखे फिर छान कर सरदी न हो ऐसे मकानमें रखे पेटमें वायुका विकार हो उसको भी फायदः करताहै और दाड़िमी का अर्क भी इसी तरह बनाया जाता है न मुकाबिले जंभीरीके कम गरम है । हाजमेंमें और दर्द और दिल मचलानेको नफा करता है और इसी तरकीबसे दाड़ि-

१२ पीपल	मांसे	८	२२ कायफल	"	८
१३ मिर्चकाली	"	८	२३ पुहकरमूल	"	८
१४ असगन्ध	"	८	२४ पाठर	"	८
१५ रासन	"	८	२५ रेनुका	"	८
१६ कूट	"	८	२६ तज	"	८
१७ मोथा	"	८	२७ पत्रज	"	८
१८ बच	"	८	२८ इलायचीसफेद	"	८
१९ देवदारु	"	८	२९ लौंग	"	८
२० इन्द्रजौ	"	८	३० नागकेसर	"	८
२१ भारंगी	"	८	३१ तिलोंका तेल	सेर ५२	

पहिले तेल कढाईमें चढावें उसमें सब अर्क और विप ढाल देय जब अर्क विप जल जाय तब तैलको छान लेय फिर सब दवाई दोसेर पानीमें घोलकर तैलमें चढा देय जब पानी जल जाय तब तैल छान लेय और इस तैलकी मालिश करनेसे फालज और गठियाको बड़ा फायदः होताहै और जिसममें जहां कहीं दरद हो मालिश करनेसे आराम होजायगा। तैल मलकर अर-ण्डके पत्ते बांध देय तब जियादः नफा होताहै ।

अथ अर्कजंभीरी नं० ८४.

१ अर्क जंभीरी सेर	५	७ अजवाइन	"	३
२ हींग भुनी तोले	५-४	८ लौंग	"	३
३ पीपल तोले	३	९ वायविडंग	"	३
४ मिर्च काली	"	१० नोन काला	"	२४
५ सोंठ		११ नोन सेंधा	"	३
६ राई				

इन सब दवाइनको कूट कपड़ छान कर फिर अर्क जंभीरीमें मिलाय देय फिर घीके बरतनमें २१ रोज घोडेकी लीदमें गाड देय फिर निकालकर छान-लेय पेटके दरदको और बद्धाजमेंको बडा फायदः करता है मौताज अर्क ४ मासेसे १ तोले तक और जो अर्क छान कर दवा बचै उसको पीसकर दो चने बराबर गोली बनालेय वह भी मुताबिक अर्कके फायदा करेगी और अक छान कर चीनी या काँचके बरतनमें रखे और १५ रोजतक पहिले धूपमें रखे फिर छानकर सरदी न हो ऐसे मकानमें रखे पेटमें वायुका विकार हो उसको भी फायदः करता है और दाड़िमी का अर्क भी इसी तरह बनाया जाता है न मुकाविले जंभीरीके कम गरम है । हाजमेंमें और दर्द और दिल मचलानेको नफा करता है और इसी तरकीबसे दाड़ि-

मीका अर्क बनता है लेकिन अर्क जभीरी गरम है और अर्क दाडिमी गरम नहीं है और दिल मचलानेके वक्तमें और के आनेके वक्त अर्क जंभीरीसे अर्क दाडिमी ज्यादा नफा करता है ।

अथ गोली (झूल गज केसरी) नं० ८५.

१ कुचला शुद्ध मासे ६४	११ सोंठ मासे ८
२ कंजाकी मींगी " १६	१२ हर्र " ८
३ हींग भुनी " १६	१३ सज्जी " ८
४ सुहागाका फूला " १६	१४ जवाखार " ८
५ अजवायन " १६	१५ सेंधा " ८
६ पीपल " ८	१६ कालानोन " ८
७ पीपलामूल " ८	१७ साँभर नोन " ८
८ चाब " ८	१८ खारी " ८
९ बेलकी गिरी " ८	
१० काली मिर्च " ८	१९ गंधकशोधापोंगीका ८

इन सब दवाइनको पीसकर अदरकके रसमें २ पहर घोटै फिर चने वरावर गोली कर लेंवै और गरम पानीसे गोली खाय तो सर्व झूल जायँ पेटके दर्दको बहुत सुफीद है ।

अथ गोली खांसीकी नं० ८६.

१ वंशलोचन	मासे ६
२ केशर	" ६
३ बहेड़ेकी बकली	" ६
४ लौंग	" ६
५ ककडासिंही	" ६
६ कालीमिर्च	" ६
७ पीपल	" ६
८ इलायची सफेद	" ६
९ मुरैठी	" ६
१० कुलीजन	" ६
११ कत्था	" ६
१२ कस्तूरी	" १॥
१३ बबूलकी छालका अर्क	" ६४
१४ अदरकका अर्क	तोला १० मासे ८
१५ पान बँगला २५ का अर्क	

इन सब दवाइयोंको पीसकर उड़द बराबर गोली बना अदरकके अर्कमें खिलावे तो खांसी बन्द हो-
जाय पियाजके अर्कमें देजेके वास्ते खिलावे ।

अथ गोली दार्मीवट नं० ८७.

१ सोठ	मासे ८
२ जायफल	" ४

३ जावित्री	मासे
४ इलायची सफेद	" ४
५ अफीम	" २

दाढ़िमी दो बड़ी कपड़मिट्टी करके आगमें पकालेय फिर सब दवाई मिलाकर पीस लेय मर्दके वास्ते झखेरीके वेरके बराबर और बालकको चने बराबर गोली बना लेय जिसको गोली खिलावै दस्त बन्द हो जावेंगे गोली ऊपर लिखे बमृजिवसे छोटी बनावै जैसा बल देखे उसी कदर दे और जो कम फायदः हो दस्त बन्द नहों तो १ मासे हर और ४ रत्ती अज-वाइन आध पाव पानीमें ओटावै जब टके भर रहि जावै तब खूब टंढा करके सेंधा नमक डालकर इसके साथ गोली खिलावै, और हूजेमें खिलाई जाती है ।

अथ गोली अजीर्णानार नं० ८८.

१ जायफल	मासे १६
२ इलायची सफेद	" १६
३ लोंग	" १६
४ अफीम	" ८
५ कस्तूरी	रत्ती ६

सबको पानीमें पीसकर १ चने तथा २ चने बरा-बर गोली बना लेय और नम्बर ७ के मुताबिक काममें

लावे अजीरण वा हैजेमें दी जाती है जियादः अजी-
रण हो तो २ मासे हर १ मासे अजवाइन आधा मासा
नमक लाहौरी आध पाव पानीमें ओटा कर जब
तीन पैसे भर रहे उसके साथ गोली खावे हैजेमें आध
आध घंटेमें ठंडे पानीसे देय जब सेहत होने लगे तब
वक्तसे देय ।

अथ दवाई दादकी नं० ८९.

१ सुहागा	मासे १६
२ मालकांगनी	" १६
३ सीतलचीनी	" १६
४ पारा	" १६

इन सबकी कागजीके अर्कमें गोली बनाकर पानीमें
घिसकर लगानेसे दाद जाता रहेगा ।

अथ पीपल पाक नं० ९०.

१ दूध	सेर ५६
२ पीपल	मासे ६४
३ पिस्ता	" ६४
४ बादाम	" ६४
५ गोला	" ६४
६ मुनक्का	" ८
७ वर्क चाँदीके	नग २०

८ तज	मासे ६
९ पत्रज	" ६
१० इलायची सफेद	" ६
११ नागकेशर	" ६
१२ वंशलोचन	" ६
१३ लोंग	" ६
१४ जटामांसी	" ६
१५ केसर	" ६
१६ जीरा सफेद	" ६
१७ जीरा स्याह	" ६
१८ चीता	" ६
१९ नागौरी असगंध	" ६
२० गिलोय	" ६
२१ सोंठ	" ६
२२ कालीमिर्च	" ६
२३ जायफल	" ६
२४ जावित्री	" ६
२५ गोखरू छोटे	" ६
२६ बेलका गूदा	" ६
२७ खस	" ६
२८ खुरासानी अजवावन	" ६
२९ मूढ	" ६

३० वरा	मासे ६
३१ सार	" ६
३२ अभ्रक	" ६

पहिले पीपलको खूब महीन पीस कर फिर दूधमें डालकर खोवा कर लेय फिर छटोक भर घी डालकर खोवा भून लेय फिर दो सेर खांडकी चासनी करके खोवा समेत सब दवाई पीस कर चासनीमें मिला कर गोली पैसाभरकी तथा टके भरकी बनाकर दूधके साथ खावै तो वायके रोगोंको बहुत फायदः करे और शरीर पुष्ट करे ।

अथ दवाई फालिजकी नं० ९१.

१ लौंग	मासे ६४
२ कालीमिर्च	" ६४
३ ३ पीपल	" ६४
४ अफीम	" ६४
५ घी गायका	" ९६
६ अकरकरा	" ३२
७ कुलीञ्जन	" ३२
८ तिलसी पत्थर	" ३२

इन सब दवाईनको पीस कर तीन मौताज कर लेय एक वारमें मालिश करनेमें टका भर घी गर्म करके मिलावै उसको तालूके ऊपर मालिश करके

ऊपरसे ४ या ५ पत्ते अरंडके बाँध देय और रजाई लुढाकर यह धूनी देय ।

दवाई धूनीकी.

१ गन्धक	मासे	३२
२ नौसादर	"	३२
३ मेथी	"	६४

सबको पीसकर ३ मौताज कर लेय मालिशके पीछे धूनी देय और हरताल फूककर खानेको देय ।

अथ शीतभंजीरस नं० ९२.

१ हरताल शुद्ध	मासे	३२
२ पारा	"	१६
३ गन्धक	"	८
४ मनसिल	"	४

पांच पैसा भरकी कटोरी एक ताँवेकी वनवाँवे फिर सब दवा पीस कर कटोरीके भीतर दवाइयोंका लेप करदे फिर कटोरी हाँडीमें रखकर ऊपरसे वालू भर देय ४ पहर तेज आंच करे फिर कटोरीको निकाल कर पीस लेय मौताज १ रत्ती शहदमें मिलाकर जिसको शीतज्वर आता हो उसको १ पहर पहिले खानेको देवे और खानेको दूध भात देय, दवा करेलेके रसमें पीसी जावेगी और कटोरी सब दवाओंके दगवरहो यह

इवा घोर सन्निपातको भी अच्छा करतीहै प्रमाण
 नाँचका जब बालूमें खील होजावै ।

अथ गिल्टी बैठजानेकी दवाई नं० ९३

१ पाखानभेद	मासे ३२
२ समुद्रशोष	॥ ३२
३ तज	॥ ३२
४ मेदा	॥ ३२
५ कुचला	॥ ३२
६ मुसव्वर	॥ ३२
७ गूगल	॥ ३२
८ आँवा हल्दी	॥ ३२
९ अकरकरा	॥ ३२
१० सफेद छुँगुची	॥ ३२
११ अफीम	॥ ३२
१२ कालीमिर्च	तोले २६ - ८

सबको पानीमें पीसकर ८ मोताज करलेय सबेरेको
 गिल्टी पर १ मोताज बाँध देय फिर दूसरे रोज सबेरेको
 उसे खोल दूसरी मोताज बाँध देय ऐसे ७ सात आठ
 रोज बाँधे गिल्टी बैठि जायगी ।

अथ एलादि चटनी नं० ९४.

१ इलायची सफेद	मासे ४
२ लोंग फूलदार	॥ ४
३ नागकेसर	॥ ४
४ कंकोल	॥ ४
५ खील धानकी	॥ ४
६ गुढेलके फूल	॥ ४
७ चन्दन लाल	॥ ४
८ मोथा पीपल	॥ ४
९ पीपल	॥ ४
१० मिथ्री	॥ १६
११ शहद	॥ ३२

सबको पीसकर शहद और मिथ्री मिलाकर अँगुलीसे, थोड़ी थोड़ी देर बाद कय आनेके ऊपरसे खिलावै ।

अथ धातुपुष्टिकी दवाई नं० ९५.

१ बबूलकी फली	तोले १
२ तालमखाना	मासे ६
३ बीजचन्द	॥ ३
४ मिथ्री	तोले ३॥

बबूलकी फली विना बीज छाँहीमें सुखाकर फिर

सब दवाओंको पीस कर छान लेय खुराक द्या ७ मासे
पावभर दूधके साथ खाय ।

अथ मुजाककी दवा नं ९६.

१ गोखरू दोनों	मासे ६४
२ सालमली	" ३२
३ ककडीके बीज	" ३२
४ खीरेके बीज	" ३२
५ करं	" ३२
६ काहू	" ३२
७ कुलफा	" ३२

सब दवा पीस कर खुराक १ पैसाभर पानीमें मिला
कर फिर छान कर मिसरी डाल कर पीलेय ।

अथ चटनी सितोपलादि नं० ९७.

मिसरी	मासे १६
वंसलोचन	" ८
इलायची सफेद	" ४
तज	" २
पीपल	" १

सबको पीसकर मिसरी मिलाकर सहत यास र्वत
अनारमें खावै बुखार या खुसकीको बहुत फायदा
करतीहै तरावट करतीहै और भूखको बढ़ाती है,

खुराक १ मासेसे २ मासे तक अगर ताकतके वास्ते चाहें तो मूँगेकी साख मोती चांदीके वर्क यह तीन चीजें और मिला ले ।

अथ मापादि मोदक नं० ९८.

१ दाल उडदकी धोईका	१५ वच	मासे ४
आटा तोले १०-८	१६ सोंठ	" ४
२ गेहूँका आटा "	१७ पीपल	" ४
३ जौका आटा "	१८ मिर्च काली	" ४
४ चावलका आटा,, १०-८	१९ इलायची सफेद,,	३
५ तज मासे ४	२० बंशलोचन	" ३
६ पत्रज "	२१ केसर	" ३
७ लौंग "	२२ मोती	" १
८ मूसली सफेद "	२३ गोला	" २४
९ बिलाईकंद "	२४ वादाम	" २४
१० कौंचकी जड "	२५ पिस्ता	" २४
११ गंगेरण "	२६ किशिमस	" २४
१२ गोंदनीकी छाल,, ४	२७ छुहारे	" २४
१३ गोखरू छोटे "	२८ घी	सेर ॥
१४ वेलका गूदा "	२९ खोंड छटाँक	॥ =

सब दवाई चूरण करके और आटा वीमें भून कर खोंडकी चासनी करके लड्डू छटाँक भरका बाँध लेय ।

लड्डू खाय ऊपरसे पाव ५। भर दूध पी लेय तो शरीरको बहुत पुष्ट करै ।

अथ शिंगार अभ्रक नं० ९९.

१ अभ्रककीभस्ममासे	१६	१३ गजपीपल	मासे १
२ चन्द्रोदय	" १	१४ तेजवल	" १
३ गन्धक	" १	१५ घायके फूल	" १
४ सार शिंगरफ	" १	१६ इलायचीसफेद	" ३
५ कपूर	" १	१७ जायफल	" ३
६ खस	" १	१८ सोंठ	" ४
७ बालछड	" १	१९ मिर्च काली	" ४
८ लौंग	" १	२० पीपल	" ४
९ तज	" १	२१ हर	" ४
१० नागकेसर	" १	२२ बहेडा	" ४
११ तालीस	" १	२३ आंवला	" ४
१२ जावित्री	" १		

सबको पीसकर एक पहर पानीमें घोटै फिर चने वरावर गोली बनालेय और ऐसेभर फालसाकी छाल शामको आध पाव पानीमें भिगोय देय सुबहको मलकर लुआव- निकाल लेय मिथी डाल कर एक गोली लुआवके साथ खाय तो पेशाबका जियादः आना बंदहो जाय और ताकतके वास्ते दूधमें खावे जीर्णज्व-

रके वास्ते गोलीको पीसकर सर्वत अनार खाह शह-
तमें खिलावै वायुके रोगोंको अरण्डकी जडके काढेमें
खिलावै, और खांसीको गोली वैसेही खिलावै,

अथ मूसलीपाक नं० १००.

१ मूसली सफेद	तोले २१-४
२ दूध गायका	शेर ५३॥॥ =
३ घी	आधसेर ५॥
४ खांड़	सेर ५ १
५ गोंदवबूलका	मासे ३२
६ बादामकी गिरी	॥ ३२
७ गोला	॥ ३२
८ जायफल	॥ १६
९ लौंग	॥ १६
१० केसर	॥ १६
११ चाव	॥ १६
१२ डंवर	॥ १६
१३ वालछड	॥ १६
१४ कोंचके बीज शुद्ध	॥ १६
१५ तज	॥ १६
१६ पत्रज	॥ १६

१७ इलायचीसफेद	माशे १६
१८ नागकेसर	" १६
१९ मिर्च काली	" १६
२० पीपल	" १६
२१ सोंठ	" १६
२२ जावित्री	" १६
२३ सालव	" १६
२४ चोवचीनी	" ६४
२५ पिस्ता	" ६४
२६ चिरौजी	" ६४
२७ कुलीजन	" ८
२८ अजमोद भुना	" ८
२९ पोदीनी	" ८
३० मस्तगी	" ८
३१ उसवा	" ८
३२ मूंगेकीजड	" ८
३३ कस्तूरी	" ८
३४ मोती	" ८
३५ पर्क चांदी	नाग १०
३६ वर्क सोने	" १०

सब दवाई पीस लेय और गोंद भून लेय और मूस-
लीको घीमें कोराय लेय और दूधका खोवा कर

लेय और खाँडकी चासनी कर लेय फिर सब दवाई और खोवा चासनीमें मिलादेय फिर अवरक ४ मासे और मिलादेय और सार ४ मासे मिलादेय और सब मिलाकर लड्डू टके भरका बना लेय सुराक टके भरकी पेशाब बहुत आती हो तो कमती आवै और ताकत करे और पुष्ट होय ।

अथ देहके विगडनेमें चोवचीनी नं० १०१.

१ चोवचीनी	तोले ५
२ नागोरी असगंध	मासे १२
३ मूसली सफेद	॥ १२
४ लौंग	॥ १२
५ जावित्री	॥ १२
६ कहरवा	॥ १२
७ वंशलोचन	॥ १२
८ चिडियाकन्द	॥ ८
९ छतावर	॥ ८
१० कौचके बीजकी गिरी	॥ ८
११ जायफल	॥ ८
१२ अकगरा	॥ ८
१३ कूलोजन	॥ ८
१४ केसर	॥ ८

१५ अजवायन	मासे ८
१६ हाली	" ८
१७ मेथी	" ८
१८ मस्तगी	" ८
१९ गोंद ढाँकका	" ८
२० सतगिलोय	" ८
२१ काला विच्छू	" ८
२२ इलायची सफेद	" ८
२३ दालचीनी	" ८
२४ पत्रज	" ८
२५ इलायची लालके दाने	" ८
२६ कमलगट्टेकी मींगी	" ८
२७ तोदरी सफेद	" ८
२८ जीरा गुलाबका	" ८
२९ जीरा काला	" ८
३० भूगेकी जड	" ८
३१ हिजरिलयहूद	" ८
३२ डम्बर	" ६
३३ वालछल	" ६
३४ अगर	" ६
३५ नदोली	" ६

३६ किशिमिश	मासे १६	४३ मोती	मासे ६
३७ वादामगिरी	,, ४८	४४ वर्कचांदीके	,, ९
३८ बहमन दोनों	,, १६	४५ वर्क सोनेके	,, ३॥
३९ पिस्ता	,, ४८	४६ अम्बर	,, २
४० चिलगोजा	,, ४८	४७ संगइसम	,, ४
४१ कस्तूरी	,, ३	४८ गोखरू बडे	,, ६
४२ उसवा	,, ११	४९ तालमखाने	,, ६

इन सब दवाओंको चारीक चूर्ण कर शहतमें मिलाकर जिसमके खून बिगड़े हुंको खिलावै परहेज मिर्च खटाई गुड तैल ४० दिन तक दवा खानी होगी ।

अथ आदमीकी सुस्तीकी दवाई नं० १०२,

१ समुद्र सोख तोले	१३-४	६ खेड़चीनी तोले	१३-४
२ विलाईकन्द	,, १३-४	७ माजूफल	,, १३-४
३ सरफोंकाकीजड,	,, १३-४	८ बाजकपूर	,, १३-४
४ कलौंजी	,, १३-४	९ वेलके फूल	,, १३-४
५ रासन	,, १३-४	१० नींबूके फूल,	,, १३-४

इन सबको ब्राह्मीके अर्कमें पीसकर घेर बराबर गोली बनालेय एग गोली सुबह और एक गोली शामको खाय तो बल और पुष्टि करे और सुस्ती जाय ।

अथ बहुत पेशाव आनेकी दवाई नं० १०३.

१ वंशलोचन	तोले १	५ मुसली सफेद	,, १०-८
२ सालव मिथ्री	,, १	६ फलीवबूलकी	,, १०-८
३ समुद्र सोख	,, ५	७ विनौलेकीगिरी	,, १०-८
४ तालमखाने	,, ५		

इन सबको पीसकर सबकी बराबर खाँड मिलावे
खुराक मासे ९ से तोले १ तक और २ तोले रुखे-
जामन यानी जामनकी शिकंजवी १५ तोले अर्क गाड-
जवाँके साथ १ खुराक खावे सुबह शाम दोनों वक्त
तो बहुत पेशाव आना वन्द होय ।

अथ बवासीरकी दवाई नं० १०४

१ निमकौरीकी गिरी	तोले ५-४
२ बकायनकी गिरी	,, ५-४
३ इमली कच्चीकी गिरी	,, ५-४
४ गुगल भेंसा	,, ५-४
५ मिथ्री	,, २१-४

सबको पीसकर झखेरीके बेर बराबर गोली बनावे
सुबह शाम खाय परहेज कुछ नर्ही ।

अथ खुश्की दवाई नं० १०५

१ तज	माशे २	५ मुनक्का	मासे २
२ पत्रज	" २		" २
३ इलायची सुख	" २	६ खस	" २
४ चन्दन सफेद	" २	७ मिथ्री	" १२

सबको पीस कर मिला लेवै पिलास बहुत होय तो खाँड़के शरबत छटाक भरमें दवाई २ माशे मिलाकर दिनमें दो चार दफे पिलावै थोड़ी पिलास होय तो शहदके साथ खाय ।

अथ विजयचूर्ण कब्ज पर नं० १०६.

१ बेल	माशे १६	११ सेंधानोन	मासे १६
२ अजवाइन	" १६	१२ कालानोन	" १६
३ वच	" १६	१३ सामर	" १६
४ चीता	" १६	१४ बुरारी	" १६
५ हींगभुनी	" १६	१५ बढानोन	" १६
६ अतीस	" १६	१६ मूड़	" १६
७ साँफ	" १६	१७ जवाखार	" १६
८ पाठर	" १६	१८ इन्द्रजौ	" १६
९ चाव	" १६	१९ साँठ	" १६
१० कटुकी	" १६	२० पीपल	" १६

२१ मिर्चकाली	मासे १६	२५ तज	मासे १६
२२ हर्	१६		
२३ बहेडा	१६	१६ पत्रज	१६
२४ आमला	१६	१७ इलायची सुख	१६

सबको पीस कर गरम पानीके साथ खाय खुराक
१ मासेसे ४ मासे तक और अतीसारके वास्ते मट्टेके
साथ खिलावे ।

अथ आतशककी दवाई नं० १०७.

१ सीमा	मासे १६
२ मनसल	१६

सीसाको करछेमें पिघलावे उस पर मनसल पीसकर
डालता जावे जब शीशा भस्म हो जावे तब उतारलेय
पान पर १ चावल रख कर खाय ४ चावल तक ।

अथ सुस्तीकी दवाई नं० १०८.

१ वीरबहोटी	मासे १	५ शराव	पाव ५।
२ लॉंग	४		
३ जायफल	नाग ७	६ कानका मेल	मासे १०
४ पान	१५	७ कवूतरका विष्टा	४

सबको घोट शराबमें इन्द्रिय पर लेपे जो फुँसी हो जावे तो मक्खन लगावे ।

अथ तालीसादि चूर्ण नं० १०९.

१ तालीस	तोले १	१४ इलायची लाल	
२ अतीस	" १	मय वकले तोले	१
३ नागकेसर	" १	१५ कचरी सेंधा	" १
४ अमलवेत	" १	१६ पीपलमूड	" १
५ पोस्तकावकला	" १	१७ कचूर	मासे १
६ हूमीमस्तगी	" १	१८ चीता	" ६
७ ककडासिंही	" १	१९ सोंठ	" ६
८ दारमीके दाने	" १	२० पीपल	" ६
९ समुद्रफेन	" १	२१ अजवायन	" ६
१० जवाखार	" १	२२ लोंग	" ६
११ सजी गुलाबी	" १	२३ सेंधा नोन	" १६
१२ सुहागा कच्चा	" १	२४ काला नोन	" १६
१३ पोदीना सूखा	" १	२५ बुडारी नोन	" १६
		२६ सामर नोन	" १६

इन सबका चूर्ण हाजमें और दस्तके वास्ते जैसी ताकत देखे वतना खिलावे । सबको कूट छान कगजी के अर्कमें भिगोवे गोली ४ चने वगवर बाँधे ।

अथ हाजमे और पेटके दरदकी दवाई नं० ११०

१ सौंफ	तोले ३	७ अमलवेती	मासे ६
२ मिर्च काली	॥ ३	८ जवाखार	॥
३ लोंग	॥ ३	९ सज्जी गुलाबी	॥
४ सेंधा नोन	॥ ३	१० जीरा काला	॥
५ काला नोन	॥ ३	११ इलायची सफेद	॥ ६
६ गन्धक औंलासार	॥ ३	१२ चकोतरेका छिलका	॥ ६

सबको कूटकर ३ दिन कागजीके अर्कमें घोटै फिर ४ दिन घीगुआरके पट्टेमें घोटै खुराक १ मासे से २ मासे तक

अथ जिगरी हरारत भूककी दवाई नं० १११

१ कोनेन	रत्ती ६	३ लोहेका कुश्ता	॥ ६
	॥ ६	४ बबूलका गोंद	॥ ६

सबको पानीमें पीस कर गोली नग १२ बना लेय गोली १ पानीके साथ खावै ।

अथ धातु गिरनेकी दवाई नं० ११२

१ रांगका कुश्ता	मासे ३	५ सतशिलाजीत	मासे ३
२ इलायची सफेद	॥ ३	६ मोती	॥ १
३ वंशलोचन	॥ ३	७ वर्क चांदीके	नग १२
४ सतगिलोय	॥ ३		

सबको गुलाबके अर्कमें खरल करे खुराक नग २४ बना लेय दूधके साथ खावै ।

अथ लवणभास्करचूर्ण नं०. ११३.

१ समुद्र फेन	मासे ८	१२ चाव	मासे २
२ काला नोन	" ५	१३ अमलबेती	" २
३ वायविडंग	" २	१४ जीरा सफेद भुना	" २
४ सेंधा नोन	" २	१५ धनियां	" २
५ खारी नोन	" २	१६ इलायची सुखकेदाने	" २
६ पीपल	" २	१७ इलायची सफेदकेदाने	" १
७ पीपलामूल	" २	१८ काली मिर्च	" १
८ पत्रज	" २	१९ सोंठ	" १
९ जीरा काला	" २	२० दारुमीके दाने	" ४
१० तालीस	" २	२१ दालचीनी रत्ती	४
११ नागकेसर	" २		

सबको कागजीके अर्कमें पीस लेय सुराक जितना मुवाफिक आवे ।

अथ हुचकीकी दवाई नं० ११४.

१ छहारा	मासे १	४ घी	मासे ६
२ मुनक्का	" १		
३ मिथ्री	" १	५ शहत	तोले २

सब पीस मिलाकर थोड़ी ५ देरमें खिलाई जावे ।

अथ विडंगादिचूर्णं नं० ११५.

१ वायविडंग	मासे ३२	५ मिर्च काली	मासे ४
२ ककडासिही	॥ १६	६ अमल बेती	॥ ३२
३ पोर्दीना	॥ १६		
४ जंगीहर्	॥ १६	७ सेंधानोन	॥ २८

सबको चूर्णकर मट्टेके साथ या जैसा मौका होवै अजीर्णमें देवे ।

अथ पेटके दर्दका नं० ११६.

१ समुद्र सोख माशे	१६	४ तज	मासे २४
२ मेदा लकड़ी	॥ २४	५ मेथी	॥ १६
३ हालीं	॥ २४	६ हल्दी	॥ १६

सबको कूट पानीमें मिलाय पेटपर लेप करै कंडेकी आगसे सँके ऊपग्से अरंडके पत्ते बाँधे पहिले हल्दीकी पीटलीसे सकै अलसीके तेलमें डुबो डुबोके ।

अथ अंग्रेजी दवा कलेजेके दर्दको नं० ११७.

१ पेन किलर—कलेजेके दर्दको तो पानी दश कतरे तक दिया जावे और जिसमें किसी जगह दर्द हो तो मालिश की जावे नफा होता है और हेजेमें भी दश घूँद थोड़ी थोड़ी देरमें देता रहे तब नफा होगा ॥ और मामूली दस्त केको भी नफा करता है ।

अथ दिमागकी रेजशकी दवाई नं० ११८.

धुसरायनमें काटेदार फल होताहै जिसको विन्दा ल कहतेहैं वह लेना चाहिये उसका छिक्कल छुटाकर अन्दर से जाला निकालकर छःमाशे पानीमें दशमिनट भिगो कर मल कर पानी नाककेर स्ते खींच लिया जावे अथवा धुसरायनका फूल दिमागकी रेजश निकालनेको भिगो कर सूँचे और ३ दिन तक खुश्क दाल रोटी खावे चिकनई न खाय और स्त्रीके गर्भ गिरानेको योनिमें बत्ती रखै । अथवा खूबकला दो माशे साफ करके चार पैस भर मिश्रीका शरबत गरम करके उसके साथ फाँक लेवे तीनरोज चिकनई न खाय जुकाम बन्द जारी हो जावे और साफ हो जावे हरास्त खुवार जाती रहै ।

अथ हुचकीकी दवाई नं० ११९.

१ इलायची	माशे १
२ वशलोचन	" १
३ जहिरमुहराखताई	" १
४ अगर	" १
५ पोदीना खुश्क	" १
६ पीपल	रत्ती ४
७ शरबत अनार	तौले २

यह दवा पीस कर मिलाकर थोड़ी रदेरमें खिलावे ।

अथ पिलानेकी नं० १२०.

१ पोदीना खुश्क माशे ४

२ अगर ॥ २

३ इलायची सफेद मय छिक्कल ॥ ४

यह दवाई पाउभर पानीमें जोश करके जब तीन
पैसे भर पानी रहजाय तब थोड़ी २ देरमें पिलावै ।

अथ चन्दन अवलेह नं० १२१.

१ चन्दन सफेद ६ पैसे भर गुलाबमें घिसै फिर
डेढ़ सेर पानीमें घोल कर हॉडीमें रखदेय सुबहको २
टके मिश्री डाल कर अवलेह बना लेय गर्म मिजाज-
वालेको खुश्की दूर करनेके वास्ते और पुष्टिके लिये
६ मासे रोज खिलावै ।

अथ अंजन आँखके जाले तथा

धुन्धका नं० १२२

१ शीसेकी गोली चलाई हुई मासे १६

२ पीपल छोटी नग ७

शीशा पत्रकरके जीरेकी तरह काटकर पीपल डाल कर
सुरमेकी तरह पीस लेवै और रातको सोते वक्त लगावै
तो जाला धुन्ध दूर हो जावै ।

दाँत दरद करते हो तो मंजन करै ।

अथ वच्चोके पसली चलनेकी दवाई नं० १२३.

१ तूतिया

मासे १

२ रीठा

" २

इनकी गोली वाजरे वरावर बनाकर घिस कर पिलावे इससे दस्त और कय आनकर आराम हो जायगा यह दवाई उस वक्त करै कि जिस वक्त किसी दवाईसे आराम न होता हो ।

अथ अर्क जामन नं० १२४.

अव्वल १ बोतलमें आँवलासार गंधक शुद्ध १ तोला और नौसादर १ तोला और सोरा १ तोला डालकर अर्क जामनका भर दिया जावे और बोतलमें डाट लगा कर फिर मिट्टीसे मुह बन्द करके धूपमें रख दी जावे ४० रात दिन रखी रहे जब तैयार होगी । खुराक १ मासेसे ३ मासे तक जालन्धरवालेको ६ मासे दिया जावे दमा और तिल्लीको बहुत नफा करता है ऊपरसे धी जियादः खाया जावे पेटके दरदको बहुत मुफीद है ।

अथ दाँतके दरदकी दवाई नं० १२५.

१ पोस्त ताड़

तोले १०-८

२ पोस्त बबूल

" १०-८

३ पोस्त कचनार	तोले १०-८
४ पोस्त अनार	" १०-८
५ पोस्त बेरी	" १०-८
६ पियवाँसा	" १०-८
७ फिटकरी	माशे ८
८ वायविडंग	" ८

एक धडे पानीमें डालकर जोश दे जब आधा रह जाय तब सोते समय कुल्ली करै और दो तीन घंटे पानीसे परहेज करै ऐसी कुल्ली १५ या २० रोज करै और सिवाय सोते वक्तके और वक्तमें मुमानियत नहीं है और पाँच छे कुल्ली गर्म पानीसे जिस कदर मुह बरदाय-शकरे और पानीकी गरमी जब मुहमें कम होजावै तब कुल्लीका पानी मुँहसे बाहर निकाल देय फिर दूसरी कुल्ली करे ॥

अथ पेचिशकी दवाई नं० १२६.

१ मस्तगीरूमी	माशे ६	४ जीरा सफेद	मासे ३
२ वेखअंजवार	" ६	५ रेशाखतमी	" ३
३ मरोडफली	" ३	६ मिथ्री	तोला १

पाव भर पानीसे जोश करे चहारम वाँकी रहे तब छानकर पी लेय मस्तगी रूमी मुवाकिल न हो तब कुन्दर डाले बजाय मस्तगीके ।

अथ तम्बाकूका नुसखा नं० १२७.

१ तमाकू	सेर ५२
२ दालचीनी लकडी	तोला ८
३ इलायची सफेद	" १॥
४ जायफल	" १॥
५ दारुचीनी	" ३॥
६ लोंग	" ३
७ इलायची सुख	" ३
८ सन्दलका बुरादा	" १
९ जाफरान	" १
१० मुश्क	मासे ३
११ अम्बर	" १
१२ पानका अर्क	तोले २१-४
१३ अर्क केउड़ा	" २१-४

सबको पीस तमाकूमें मिलाय सायामें सुखाय लेय ।

अथ कत्थाका नुसखा नं० १२८.

१ कत्था सफेद सेर ५१	६ जावित्री तोले
२ लोंग तोला ३॥	७ गुलकद "
३ जायफल " १॥	८ इलायची कल्लाँ " ३
४ इलायची सफेद " १॥	९ मुश्क मासे
५ दारुचीनी " ३॥	

कत्था पीस अर्क केउडामें औटा लेय फिर सबको पीस कत्थामें मिला लेय पहिले सब दवा अर्क केउडामें घोट लेय तब मिलावै और १५ रोज तक बंदकर रखे फिर टिकिया बनाके या केउड़ेके फूलपर सुखाकर सुशक कर लेवै ।

अथ पेटके दर्दकी दवाई नं० १२९.

१ नमक लाहौरी	तोले २	११ होंग	तोले ४
२ नमक साँभर	॥ १	१२ जीरा सफेद	॥ १
३ नमक काला	॥ ९	१३ जीरा स्याह	॥ ४
४ नौसादर	॥ ८	१४ दारुचीनी	॥ १
५ अजमोद	॥ ७	१५ लवकुरतम	॥ १
६ मिर्च काली	॥ ३	१६ जंजवील	॥ १
७ मिर्च सफेद	॥ ३	१७ मुलहटी	॥ १
८ करफस	॥ ३	१८ अनेसू	॥ १
९ अफतीमून	॥ ४	१९ नमकनकछिकनी	॥ २९
१० सम्बुलतीव	॥ ४	२० तेजाव गन्धक	॥ ८

सबको पीस मिलाय कर १ वोतलमें भर सुँह वोतलका खूब बंद करे और ३० दिन जमीनसे गाड़ देय फिर दर्द भूख हाजमेंको ४ र्त्तासे मासे तक खिलावै सुबहको और कुंब्बतेवाहको बढावे ।

अथ खांसीकी दवाई वच्चोंकी नं० १३०.

१ वहेड़ेकी वकली	मासे ६
२ मौरेठी	" ६
३ अकरकरा दक्षिणी	" ६
४ काकडासिंही	" ६

यह सब पीस कपडछान कर अनार खाली कर उसमें भर ऊपर मिट्टीसे लेपदेय फिर कंडेके दहरेमें रखदेय जब उफनके आजाय तब निकाल लेय फिर

५ शहत	तोले २
६ दूध वकरीका	" २-८
७ मूंगा	" ३

इन सबको भी खूब पीसके ऊपरकी दवायोंमें मिलायके अनारमें भरे जब दवा अनारके अन्दर पकने लग जावे तब उतार कर हिस्व ताकत खिलावे ।

अथ सांप काटेकी दवाई नं० १३१.

हुक्केकी कांयट एक चने बराबर गोली बनाकर खिलावे फौरन अच्छा होगा वेहोश होय तो आंख में लगावे होशमें आजायगा तब खिलावे

अथ स्त्रीके गर्भ रहनेकी दवाई नं० १३२.

एक पान बेंगला एक लॉगअफीम एक रत्ती सबको पीसकर चने बराबर गोली बनावे पानी न डाले और

जब स्त्री धर्मसे निवृत्त होकर चौथे दिन स्नान करे तब सुवहोको गंगाजलके साथ खावे उसी रोज स्त्री प्रसंग करे तो गर्भ रहे फर्क नहीं पड़ेगा ।

अथ दमा व खाँसी व धातु पतली व
सुस्तीकी दवाई नं० १३३.

आककी बहुत पुरानी जड मँगवा कर सायामें खुश्क करके फिर उसकी मिट्टी साफ करे उसके बाद एक नादमें खाद जमीनमें गढा खोद कर उसको जला दिया जावे जब जल जावे तब उसको ढक दिया जावे उसके कोयले और राख हो जावेगी राख दो चावल पानमें रख कर खिलावे कैसीही खाँसी हो रफा हो जावेगी और कोयले पीस कर एक बोतलमें भर मुँह वन्द करके मिट्टीमें एक गमलामें गाड़ देय और दोनों वक्त छे मास तक उस मिट्टीमें पानी डाला जाय बादको निकाल लेय और फिर रख लेवे दो चावल गायके दूधकी मलाईके साथ खावे सुहवतसे परहेज करे और खाँसी व श्वास पर भी ऊपरकी तरकीबके मुताबिक बहुत नफा करती है मुजरिव है ॥

अथ कुण्ड्वेतवाह व प्रमेहकी दवाई नं० १३४.

तुरम्वेल नीम पुस्तके करीब ५२।सवा दो सेरके निकाल कर उसका रोगन निकलवा लेवे और खुराक

(१०२) सूत्रचन्दचिकित्सा ।

१ मासेसे ९ मासे तक खावै यानी अब्बल रोज १ एक मासे दूसरे रोज २ दो मासे इसी तरह नौ रोज १ एक मासा इजाफः करे कुल अठारह रोज इस्तेमाल करे फी खुराक निस्फ माश- मिश्री भी डाल लिया करे तरकीब रोगन निकालनेकी यह है बेल नीम पुस्त लेकर मय गूदा पानीमें चढावे जब उबाल आ जय तब उतार कर बीज यानी तुर्रूम निकाल कर कोल्हूम पिरवा कर रोगन निकाल लेवे ।

अथ सुजाककी दवाई नं० १३५.

कत्था सफेद माजू इतर सन्दलमें चनेःघरावर गोली बनावै एक गोली सुबहको पानीसे खाई जावैगी ।

अथ प्रमेहकी दवाई नं० १३६.

सेबलकी मूसली कूटकर ३ तीन मासे और ३ तीन मासे शकर मिलाकर गायके दूधसे खावै ।

अथ आतशककी दवाई नं० १३७.

पपड़िया कन्धा सफेद साफ किया हुआ माजू दो अदद इलायची सफेद चार अदद इनको बारीक पीस कर पहिले जस्म धोकर मक्खन लगावे फिर दवा सुश्क लगावे एक घंटेमें सेहत मालूम होगी दो तीन रोजमें अच्छा होजावेगा ।

अथ ववासीर खूनी या वादी कैसीही
हो दवाई नं० १३८.

स्याह जीरी ३ तीन तोले स्याह मिर्च १ तोले
खूब बारीक पीस कर पानीमें गोली बाँधे खुराक
जहाँ तक होसके १ तोलेसे जियादः- खावै दो तोले
तक पानीसे स्वाह गायके दूधसे खावै मालाई दही न
खावै सात रोज तक खावै ।

अथ गठिया व दरदकी दवाई नं० १३९.

अव्वल सिंधिया जहर २ दो तोला पीस कर रख-
लेवै फिर पाव ५। भर तिलका तेल उसमें मालकँगनी
एक धेलाकी और अफयूँ एक पैसेकी डालकर कढ़ाई
पर चढ़ाकर आँच देय जब मालकँगनी और अफयूँ
जल जावै तब कढ़ाईको उतार कर ५ मिनट बाद
सिंधिया डाल कर मिलावै धुयेंसे बचा रहे रोगन
तैयार होगया । फालिज गठिया हाथ पैर जिसकं
सूख गये हों तीन साल तकके मरीजको सेहत करेगा ।
रातको मकानके अन्दर मालिस करै बादको बरगदके
पत्ते पर रोगन लगाकर चिरागपर गरम करके सेंक
देय फिर वही पत्ते बाँध देय रुअड रखकर सुबहको
उठनेसे एक घंटे पहले खोलै और पसीना पोंछ कर
मालिश रोगनकी कर दे फिर एक घंटे बाद उठे सेहत
हो जावेगी ।

अथ शरवत नं० १४० पेशाव ज्यादा अने

- | | |
|------------------------|-------------------|
| १ गुलाबासके बीज तोले १ | ४ गुलाब तीनपाव |
| २ अनार कली " १ | ५ कन्द तीनपाव |
| ३ मस्तगी " १ | इनसबका शरवत बनाले |

अथ फंकी नं १४१ पेशाव ज्यादा आनेव

- | | |
|-----------------------|---------------------|
| १ बबुलकी पत्ती मासे १ | १० कनेरगान मासे |
| २ कतीरा " १ | ११ मूँगाकीजड़ " |
| ३ कहू " १ | १२ धनियाँ " २१ |
| ४ बबुलकी फली " १ | १३ राँगकुश्ता " २१ |
| ५ गोंद " १ | १४ अजवाइनसुरा २१ |
| ६ मोती " ३॥ | १५ इमलीकच्ची " २१ |
| ७ चन्दन सफेद " ३॥ | १६ जाड़चीकेबीज " २१ |
| ८ गुल्लेअरमनी " १॥ | १७ शालममिथ्री " २१ |
| ९ सतसुपारी " १॥ | |

सबके बराबर मिथ्री सबको पीसकर फंकी बनावे

अथ अर्क नं १४२ फंकीके साथका.

- | | |
|-------------------|-------------------------|
| १ धनियाँ तोले ३ | ५ गिलोयहरी तोले १०-८ |
| २ चन्दन सफेद " ३ | ६ गुल्लेगाहजुवाँ तोले ३ |
| ३ गुलाबके फूल " ३ | ७ अजवाइनसुरासानी " ३ |
| ४ सेवतीके फूल " ३ | ८ मस्तकी " १ |

९ कंधी	तोले १०-८	१४ जामनकेपत्ते तो.	२१-४
१० गुलाबका जीरा	,, २	१५ मिश्री	,, २१-४
११ मूसली स्याह	,, २	१६ खारनिम्बू मासे	१॥
१२ बीजबन्द सुख	,, ३	१७ अनारकीक लीतोले	५
१३ ब्राह्मी	,, ३	१८ कसेरू	,, १०-८

सब दवायें आगपर चढाकर अर्क खींच लेय ५६ सेर, तरकीब खानेकी फंकी मासे ९ और शरवत तोले २ और अर्क तोले १२ सबको शरवत और अर्कके साथ फंकी खाय । पेशाब ज्यादा आना बन्द हो ।

अथ नामर्दीकी दवाई नं० १४३.

१ बीरबहूटी	मासे ३२	६ मछलीकापित्तामासे	३२
२ हांथीदांत	,, ३२	७ घुंगुची लाल	,, ३२
३ लौंग	,, ३२	८ घुंगुची सफेद	,, ३२
४ जायफल	,, ३२	९ सुअरकी चरबी	,, ३२
५ मीठा तेलिया	,, ३२	१० ऊसरसांडे नाग	१०

सब दवा पीसके उसमें ऊसरसांडे डाल देय फिर हांडी चिकनीमें भरै और हांडी तले छेद करै उसमें सींक लगाय देय उसके नीचे एक बरतन रख देय ऊपरसे आरने कंडोंकी आँच देय फिर तेल निकाल लेय तेल लगाके पानको बांध देय नामर्द आदमी मर्द होय ।

अथ घुसरायन जुकामपर नं० १४४.

घुसरायनके फलका छुलका उतारकर फूल रहिजावै उसका गुण ॥ एक फूल भिगोकर सूँघे जुकाम जारी होकर दिमाग साफ होकर हलका होजावैगा और पागलको सुँघाया जावै तब पागल अच्छा होगा, और पेटके कीड़े ५ फूल पिलानेसे पानी होकरजाते रहेंगे । और ५ फूल पीस कर बत्ती बनाके औरतकी भगमें रखे सात दफा भिगोकर गर्भ गिर जायगा ॥ घुसरायन बिंदालका फल काटेदार होताहै वो लेना चाहिये ज्यादातर यह फल मथुरावृन्दावनकी तरफ होताहै ।

अथ छतावरका घी नं० १४५.

१ छतावरका अर्क तोले ६४	१० मुरेठी	तोले ४
२ घी ' ६४	११ मुनक्का	" ४
३ दूध " ६४	१२ जीवनी	" ४
४ असगन्ध " ८	१३ पीपल	" ४
५ छतावर " ८	१४ शहद	" ४०
६ वाराही कन्द " ८	१५ खरेटी	" ४५
७ विदारी कन्द " ८	१६ हुलहुला	" ४
८ कोंचके बीज " ४	१७ मिसरी	" ४०
९ इलायची सफेद " ४		

पहिले अर्क शतावर घी दूध शहद मिसरी अलाहदा रखै और सब दवा कूटछान कर १० सेर पानीमें औटावै जब चौथाई पानी रह जावै तब उतारकर छानले फिर घी दूध अर्क शतावर और पानी सब दवाका निकला हुआ कढ़ाईमें डालकर पकावै जब घी रहिजावै तब छानकर शहत मिसरी मिलाय दे खुराक १ तोले पेशाब ज्यादा आने और खूनके विकारको और ताकतको फायदा करताहै ।

अथ सुस्तीकी दवाई नं० १४६.

सफेद कन्हैरकी छाल पैसाभर सफेद गुंजा पैसाभर संखिया त्रिमासही गायका दूध ४ चारसेर अवटि बांदि दवा डार जामन दे मथनिकर नैनु तब पासही ॥ इन्द्रिय पर लेप करै बंगला तब पान धरै बाँधै दिन सात राति मिटै ढीलता सही । कड़ो होय बड़ो खड़ो चढो सर्व काल अड़ो अष्टयाम वामसंग कामको विलासही ॥ १ ॥

१ सफेद कन्हैरकी बकली १ ॥ २ सफेद घुंगुची १ ॥

३ संखिया विष ३ माशे ४ गायका दूध ५४ सेर ।

अथ जहर विच्छेद सांप व अफीमकी

दवाई नं० १४७.

कपासकी पत्ती पाव ५१ भर पानीमें पीसकर पिलावै अच्छा होजावैगा ।

(१०८) खूबचन्दाचिकित्सा ।

अथ हरकिसमके जहर खानेकी दवाई नं० १४८.

पत्रा मणीको पानीमें धोय कर दो तीन दफेमें पि
लावै फौरन अच्छा होजावैगा ।

अथ गिल्ट कोढकी दवाई नं० १४९.

विसखपराका रस चावल धोवन मिलाय कर दिन
२१ पिलावै अच्छा होजावैगा ।

अथ सपेद दागकी दवाई नं० १५०.

लीलाथोथा सेंजनेके बीज पानीमें घिसकर
लगावै तो सपेद दाग जाय ।

अथ विच्छूके काटनेकी दवाई नं० १५१.

१ फिटकरी सपेदका फूला रत्ती लेकर चार कतरह
पानीमें घोलकर दोनों आंखमें डालनेसे फोरन् अच्छा
होताहै जादूका असर रखताहै ।

अथ चूर्ण हाजमेका नं० १५२.

१ हर	तोले	१६	६ नोन काला	मासे	८
२ सोंठ	"	१६	७ नोन सेंधा	"	८
३ आवला	"	१६	८ नोन खारी	"	८
४ हींग भुनी	मासे	८	९ नोनसांभर	"	८
५ सुहागाका फूला					
	दाम	१२॥	१० नोन बुडारी	"	८

हर सोंठ आंवलाको तीन दिन भिगोकर महीन
 सिकर कढाईमें चढाकर भुन लेय फिर और सब दवा
 सिकर उसमें डालदे फिर झरवेरीके वेर बराबर गोली
 नाले ।

अथ घुंटी वच्चोंकी नं० १५३.

सौंफ	मासे १	११ अजवायन	मासे १
पोदीना	" १	१२ मुरैठी	" १
काकडासिंदी	" १	१३ सुहागाकच्चा	" १
सोंठ	" १	१४ अमलतास	" ४
पीपल	" १	१५ नोन काला	" १
त्रिफला	" १	१६ मुनक्का	" १
सनाय	" १	१७ सहत	" १
पित्तपापडा	" १	१८ निसोत	" १
पलाशपापडा	" १	१९ एलुआ	" १
अजमोद	" १	२० होंग	रत्ती ५१

अथ चूर्ण हाजमेंका दूसरा नं० १५४.

त्रिकुटा	माशे ४८	५ नोन काला	माशे १६
जीरा दोनों भुने	" ३२	६ गन्धक शुद्ध	" १६
नोन सेंधा	" १६	७ सुहागाकाफूला	" १६
नोन सांभर	" १६	८ होंग भुनी	" ८

सबको पीसकर कागजीके अर्कमें घोटै ७।
रत्ती ५४ साथ तो हाजमा करें ।

अथ दवा दरद तथा हाजमेंकी नं० १५५.

नोन सेंधा ५। पावभर अर्क सैजने ५।। तीन पाव
सबको खरलकरके गोला बनाकर और सुखाकर सम्पुट
करके गजपुटमें फूँकदेय खुराक ६ मासे गरम पानीके
साथ खावै दरद तथा हाजमेंको बहुत नफा करताहै ।

अथ तिल्ली तथा पेटके दरदकी दवाई नं० १५६

१ तेजाब गन्धकका	तोले १
२ सोरा कलमी	तोले ४
३ हीरा कसीस हरा	मासे ४
४ कोनैन	" ४
५ सत फोलाद	" ४

सबको ५।। तीनपाव पानीमें मिलाकर एक शीशी-
में रखवै खुराक ४ तोलेसे ८ तोले तक तिल्ली और
दरदवालेको पिलावै फॉरन अच्छा होगा तिल्ली सात
या कुछ ज्यादा दिनमें अच्छी होगी तथा तिल्लीवालेको
चिरचिटा घुन्डीवाला चिरचिटेकी घुन्डी सुखाकर एक
हांडीमें रखकर आग लगादे राख होजावेगी सुगव
मासे ६ लेकर उसके बराबर बूरा मिलाकर पानीके
साथ खिलावे ।

अथ हैजेकी दवाई नं० १५७.

नोन सेंधा सेर ५१ | ५ सीरा तीन पाव ५॥
 फिटकरी तीनपाव ५॥ | ६ हीराकसीसहरा ५॥
 नौसादर डेढ़पाव ५॥ = ७ इलायचीलालतोल १०
 सुहागा आधसेर ५॥ | ८ सोडा " १०

सबको कूटकर एक हाँडीमें भरें लेकिन हाँडी बड़ी हो सिर्फ दो अंगुल खाली रहे उसके मुँहपर एक कुन्ड रखे जिसके पेटमें छेद करके एक नली लगावे गट्टीके वरतनमें अर्क निकालें तले हाँडीके तेज आँच पर तेजाब निकलेगा छः या सात बूंद पानीके साथ ना संग्रहणीके वास्ते एक तोला आंवला रातको भगोयकर सुग्रहको घोटकर दस बून्द डालकर पिलावे १० दिन तक ।

अथ औरतके खून बून्दकरनेकी दवानं० १५८
 खरैटीकी जडीकी छाल मासे ६ ओंटाकर मिसरी मलकर पिलावे खून बन्द हो जावेगा ।

अथ आँख दुखनेकी दवाई नं० १५९.

फिटकरी रत्ती १
 मिसरी मासे १
 गलायका अर्क तोला २

सबको पीसकर कागजीके अर्कमें घोटै खुरा
रत्ती ५४ साथ तो हाजमा करै ।

अथ दवा दरद तथा हाजमेंकी नं० १५५.

नोन सेंधा ५। पावभर अर्क सैजने ५।। तीन पा
सबको खरलकरके गोला बनाकर और सुखाकर सम्पु
करके गजपुटमें फूँकदेय खुराक ६ मासे गरम पानी
साथ खावै दरद तथा हाजमेंको बहुत नफा करता है ।

अथ तिळी तथा पेटके दरदकी दवाई नं० १५६

१ तेजाब गन्धकका	तोले १
२ सोरा कलमी	तोले ४
३ हीरा कसीस हरा	मासे ४
४. कोनैन	" ४
५ सत फोलाद	" ४

सबको ५।। तीनपाव पानीमें मिलाकर एक शीशी-
में रखवै खुराक ४ तोलेसे ८ तोले तक तिळी और
दरदवालेको पिलावै फौरन अच्छा होगा तिळी सात
या कुछ ज्यादा दिनमें अच्छी होगी तथा तिळीवालेको
चिरचिटा घुन्डीवाला चिरचिटेकी घुन्डी सुखाकर एक
हांडीमें रखकर आग लगादे राख होजावेगी खुराक
मासे ६ लेकर उसके बराबर बूरा मिलाकर पानीके
साथ खिलावे ।

हाले जाड़ा आनेसे घंटे ४ पहले १ गोली खिलावे
हर १ गोली घंटे १ पहले खिलावे जाड़ा खुमार बंद
जावेगा अगर गोली और तेज करना हो तो करे-
की पत्तीऽ-छटाक डाले गोली न खुसकी करेंगी
पिआस लगेगी ।

अथ दस्तोंकी दवा नं० १६५.

जामुनकी गुठली मासे ४ पानीके साथ खिलावे दस्त
बन्द हो जावेंगे तथा पेशाब ज्यादा आते हों तो मासे ४
नीके साथ खिलावे तो पेशाब कम हो जावेंगे तथा
घोडेको दस्त आते हों तो आधपाव ऽ = जामुनकी
गुठली खिलावे तो घोडेके दस्त बन्द हो जावेंगे ।

अथ हाजमेकी दवा नं० १६६.

गन्धक पोंगीका पाव ऽ । भर नौसादर डेढ पाव
॥ = खार मूलीका आधपाव ऽ = खार चिरचिटका छ-
टाक भरऽ-सबको पीसकर हांडी डमरूयंत्रमें उडाले
सांच पहर ४ की देय दरदके वास्ते तथा हाजमेके वास्ते
हुत फायदा करता है वैसेही खाये तथा गरम पानीके
साथ खाये खुराक १ मासेसे २ मासे तक किसी हालतमें
कसान नहीं करेगा तथा गरमी नहीं करेगा ।

अथ कब्जकी दवा नं० १६७.

बेल अदद ४० जो पुस्ताहों गूदा लेकर बीज निकाल

सबको पीस मिलाकर दो दोबून्द आँखमें डाल
अच्छी हो जावेगी ।

अथ प्रदर रोगकी दवा नं० १६०.

चूहेकी मिंगनी मासे २ दूधके साथ पिलादे कैसे
खून जाताहो बंद हो जावेगा ।

अथ वायशूल दरदकी दवा नं० १६१.

१ वारूद मासे ८

२ पानी ,, ३२

उडूसाका अर्क जिसको विसौटा कहतेहैं बून्द५ स
मिलाकर पिलादे तुरंत आराम हो जावेगा और घोडे
को एक टका वारूद सराव आघपाव५ = मिलाकर
पिलावे तुरंत आराम होजावेगा ।

अथ फोडा बैठानेकी दवा नं० १६२.

विजैसारका गोंद पानीमें पीसकर लगावे तो फोडा
तथा बंद दोनों तुरन्त बैठ जावेंगे ।

अथ पुराने जखमपर लेप नं० १६३.

साँपकी केंचक आँवाहलदी मठामें पीसकर मरहम
बनाले दो दफाके लगानेसे अच्छा हो जावे गा ॥

अथ गोली जाडे बुखारकी नं० १६४

करेलेकी पत्ती ५ = छटांक कपूर मासे४ काली मि
मासे ६ सबको पीस कर गोली शरवेरीके घेर बराब

डाले जाडा आनेसे घंटे ४ पहले १ गोली खिलावे
र १ गोली घंटे १ पहले खिलावे जाडा दुखार बंद
जावेगा अगर गोली और तेज करना हो तो करे-
की पत्तीऽ-छटाक डाले गोली न खुसकी करेंगी
पिआस लगेगी ।

अथ दस्तोंकी दवा नं० १६५.

जामुनकी गुठली मासेऽपानीके साथ खिलावे दस्त
बन्द हो जावेंगे तथा पेशाब ज्यादा आते हों तो मासेऽ
नीके साथ खिलावे तो पेशाब कम हो जावेंगे तथा
डोके दस्त आते हों तो आधपाव ऽ = जामुनकी
ठली खिलावे तो डोके दस्त बन्द हो जावेंगे ।

अथ हाजमेकी दवा नं० १६६.

गन्धक पोंगीका पाव ऽ । भर नौसादर डेढ पाव
। = खार मूलीका आधपाव ऽ = खार चिरचिटका छ-
टाक भरऽ-सबको पीसकर हांडी डमरूयंत्रमें उडाले
भांच पहरऽ की देय दरदके वास्ते तथा हाजमेके वास्ते
हुत फायदा करता है वैसेही खाये तथा गरम पानीके
साथ खाये खुराक १ मासेसे २ मासे तक किसी हालतमें
कसान नहीं करेगा तथा गरमी नहीं करेगा ।

अथ कब्जकी दवा नं० १६७.

बेल अदद ४० जो पुस्ताहों गूदा लेकर बीज निकाल

डाले फिर हर वडी अदद ४० पीस कर दो सेर पान
 औटावै जब आधसेर पानी बाकी रहे तब उतार ले
 ही दो सेर पानीमें किसमिस आधसेर औटावै
 आधसेर बाकी रहे तब उतारले और सब वगैर छनी
 बेलके गूदेमें मिलाकर छानले पहले सबको रात
 रखकर सुबहको छाने फिर उसको चीनीके पियात
 रखकर सुखा ले अगहनके महीनेसे १ तोले रात
 दूधके साथ चार महीने तक खावै कब्ज जाता रहेगा
 अधिक पुष्टि करेगा फिर दूसरी साल खावै ।

अथ तेल हर किसमके दरदका नं० १६८

तेल मिट्टीका अब्बल दरजेका १ बोतल कपूर
 तोला हलदीकी गांठि अदद ६ घीमें भूनकर काली मि
 ८ मासे सब दवा मिलाकर मिट्टीके तेलमें मिला
 १ बोतलमें भर ले शिरके दर्दको तथा जिस ज
 जिस्मके ऊपर दरद हो सबको फायदा करता है ।

अथ आंखसे पानी गिरनेकी दवा नं० १६९

गेहू १ तोला शोरा ४ तोला चार रोज तक खा
 खरल करे फिर एकरोज कांसेके वर्त्तनमें खरल क
 सातरोज आंखमें सलाईसे लगावै आठवें रोजसे ती
 रोज तक उम्दः शरावके फाये आंखपर बांधे चौथे रोज
 गुलाबका फाया बांधे दस बारह रोज तक और जिय

नजर लगाकर न देखे आराम होगा जाड़ोंकी मोर
करै गरमीमें नही ।

अथ नासूरकी दवा नं० १७०.

वकायनके बीज एकसेर थोड़े कूटे जाय अरंडके
बीज एकसेर, शीशमका बुरादा एक सैर, वकरेके चारों
पैरकी नलीकी हड्डी, सबको पातालत्रयसे रोगन
निकालकर लगावै तथा रोगन बिलमाकी वत्ती नासु-
रमें रखनेसे पौरन अच्छा होताहै रोगन सपेद हो ।

अथ दवा कुष्ठकी नं० १७१.

अडी छीलकर १ अंडी सवेरको खावै दूसरे दिन
२ अन्डी छीलकर खावै इसी तरह रोज १ अण्डी बिठाता
जावै ४० दिनतक ४० अण्डीकरदे और ४१ ईकताली-
सवे रोजसे १ अडी कम करता जावै ८० असीरोजमें
यह प्रयोग पूरा होगा. खानेमें चनेकी रोटी और घी
खावै मीठा और नोन नही खावै कैसेही कुष्ठहो आराम
हो जावैगा और रसकपूरभी खिलाया जाता है उसकी
तरकीव आतशककी बीमारीपर लिखी है ।

अथ सिरके दरद और पीनसकी

दवा नं० १७२.

सिरमें दरद हो और नजला रुका हो पीनसहो और
हीड़े पडजाय उसके वास्ते विन्दालका फल लेकर

उसके अन्दरका जाला निकालकर छः मासे पानी पांच सात मिनट भिगोकर मलकर नाकके रास्ते खीं छींक उसी वक्त आवैगी फिर नहीं सूँघै इसीतरह ३ दि तक नाकसे रतूवत निकलैगी ३ दिनतक सूखीदालरोट खिलावै पीनसके कीडे भी निकल जावेंगे और अच्छ होजावैगा और योगक्रिया करनेवालोंके जब गरम दिमागमें होती है तब यही दवा सूँघतेहैं ऊपर लिखेक रीतिसे दिमाग साफ होजाताहै और पागलको सुँधानेसे पागल अच्छा होजाताहै और पेटके कीडे पांच फूल पिलानेसे मिस्लपानीके होकर बहि जातहैं पांच फूल पीस कर बत्ती बना कर सात दफे भगमें रखवै तब गर्भ गिरजाता है यह विन्दाल किस्म घुसरायनमेंसे है इस पर कटि होतेहैं यहां भी कहीं कहीं होतेहैं और मथुरा वृन्दावनकी तरफ बहुत मिलते हैं और पैननकिलर अङ्गरेजी दवासे भी दरद जाताहै और रोगन काफूर अजवायनके सतवालेके लगानेसे दरद जाता रहेगा ।

अथ रोगन कपूरकी विधि नं० १७३.

काफूर और सत अजवायन बराबर लेकर अलहिदा अलहिदा पीसकर शीशीमें भरकर हिलादे सब दोमिन-टमें रोगन हो जायगा बच्चेको माके दूधमें एक कतरा

और तीन कतरा मले जाय तो पसली अच्छी
 और हैजेके लियेभी पांच पांच बून्द
 पिलावै और जिस्ममें दरद हो तो वहाँ मालिश
 हैजेवाला भी अच्छा होजायगा ।

अथ वच्चोंकी पसलीकी दवा नं० १७४.

जायफल दो २ और जावित्री पीपल जायफलके
 और कस्तूरी १ एक मासे बंगलापानमें गोली
 मूंग बराबर माँके दूधमें वच्चेको खिलावै और
 रोगन काफूर अजवायनके सतवाला एक कतरेसे तीन
 कतरेतक माँके दूधमें खिलावै और तीनकतरे बीसकतरे
 रोगन तिलीमें मिलाकर मालिश करै और हर अनेसू
 अमलतास चार चार रत्तीकी छूटी बनाकर पिलावै
 जिसको दस्त नहीं आताहो तब पसली जाती रहतीहै ।

अथ दमाकी दवा नं० १७५.

गुलाबी सज्जी आधपाव जिसके छोटे छोटे टुकडे
 करके आठरोज आकके दूधमें भिगोय रखै नवमें
 दिन एक मलैयामें इतना आकका दूधभरे जितनेमें
 सज्जी डूब जाय फिर कपड मिट्टी करके आठसेर
 कंडोमें फूंक दैव खुराक दो मासेसे चार मासेतक घीके
 साथ खावै तो दमा जाय ।

अथ सुस्तीकी दवा नं० १७६.

दो जोंक जो नीले रंगकी होतीहैं उनको गधेके फोतेमें लगावै जब गधून पीकर जोंक गिरै तब उठाकर मुँह बांधकर तीन रोज तक रखलेवै फिर गोखरू छोटे और माजृफल और वीरवहोटी सब जोंककी बराबरलेकर घीगुवारमें पीसकर कपडेमें लगाकर छोटी छोटी बत्ती बनावै छाईमें सुखाकर आतसी शीशीमें भरै. पाताल-यंत्रसे रोगन निकलै और धानकी भूसीकी आँच करै शीशीके मुँहमें सींक लगाकर एक नांदमें छेद करके शीशी उलटी रखवै नांद चूल्हे परर रखै तले बरतन चीनीका रखदे देखता रहे जब रोगन निकलना बन्द हो तब रोगन निकाल लेवै उसको मलकर पान बाँधै खाव न होने दे उम्मेद है कि सातरोजमें अच्छा हो जावैगा ।

अथ जोगराज गूगल वायुपर नं० १७७.

सांठ मासे ४ पीपल मासे ४ चाव मासे ४ पीपलखूल मासे ४ चीतेकी छाल मासे ४ इींग भुनीमासे ४ अज-मोद मासे ४ सरसों पीली मासे ४ जीरा दोनों मासे ८ समालू मासे ८ इन्द्रजी मासे ४ पाढर मासे ४ वाय-विडंग मासे ४ वच मासे ४ गज पीपल मासे ४ कुटकी मासे ४ अतीस मासे ४ भारंगी मासे ४ मूरवा मासे ४

छैलबीजा मासे ४ गोखरू मासे ४ त्रिफला मासे १२
गूगलशुद्ध मासे १०० फौलाद तोले ४ वंग तोले ४
चांदीकी भस्म तोले ४ नागेश्वर तोले ४ अबरख तोले
४ मन्दूर तोले ४ रससिंदूर तोले ४ सब दवाई धी
लगाकर कूटता जाय जितना जियादः कुटैगा उतना
अच्छा होगा सुराक रत्ती १ से रत्ती २ तक अनुपान
वैद्यकी रायपर जैसा मौका देखै ।

अथ जोगराज गूगल दूसरा नं० १७८.

सोंठ २५ पीपलामूल २५ चाव २५ चीता २५
सरसों पीली २५ काली मिर्च २५ हींग भुनी २५
अजमोद २५ जीरा देनों ५० रेनुका २५ इन्द्रजौ २५
पाठर २५ गजपीपल २५ वायविडंग २५ कुटकी २५
अतीस २५ भारंगी २५ वच २५ मुरैठी २५ पत्रज २५
देवदार २५ पीपल २५ रासन २५ कूट २५ नागरमोथा
२५ सेंधानोन २५ इलायची लाल २५ गोखरू २५ धनि-
यां २५ हर्र २५ बहेड़ा २५ आंवला २५ तज २५ खस
२५ जवाखार २५ मूरवा २५ सबको बराबर लेकर कूट
पीसकर कपडछान करले फिर सबकी बराबर गूगल
डाले फिर गूगलसे चौथाई धी मिलाकर खूब कूटे
जितना जियादः कूटैगा उतना अच्छा होगा ।

अथ शिंगरफ वातरोगपर नं० १७९.

शिंगरफकी डली पल ४० सहत पल २४ भिला-
वेका तेल पल २४ घी गायका पल २४ इन तीनोंको
कढाईमें चढावै फिर शिंगरफकी डलीपर भिलावे पल४
पीसकर लगावै जिसमें शिंगरफ छिपजावै तथा मीठा
तेलिया पल ४ घीगुवारके रसमें पीसकर उसमें डली
धरे फिर डलीको कढाईमें डालदे कढाईको चूल्हेपर
धरकर आग वारै पहरतीन जवतकके कढाईका रस
सब जल जाय फिर डली कढाईसे निकालकर पानीसे
धो डालै तब शिंगरफ सिद्ध हो जायगा खुराक रत्ती
१ पानके साथ तथा सहतमें खाये तो सर्व वायु कफके
विकार जावै और क्षुधा करै और वीर्यकी वृद्धि होय ।

अथ गोली संजीवनी नं० १८०.

१ वायविडंग	मासे १६	६ आँवला	मासे १६
२ साँठ	" १६	७ बल	" १६
३ पीपल	" १६	८ गिलोय	" १६
४ हर	" १६	९ भिलावा	" १६
५ वहेड़ा	" १६	१० सिंगिया	" १६

सब दवा कूटकर गोमूत्रमें पीसकर खुंगची वरावर
गोली बनाले अदरकके रसके साथ खाय साधारण

बुखारमें एक गोली खाय और सन्निपातमें दो गोली खाय और सांप काटनेपर चार गोली खाय ।

अथ सुरमा आँखका नं० १८१.

सीसाको खट्टी छाछमें १०८ बार शोधै और काले सुरमेको कागजीके रसमें ७ सातदिन घोटै तब शुद्ध होगा इस विधिका सुरमा २ तोला और सीसा शुद्ध २ तोला पारा शुद्ध २ तोला मिसरी २ तोला समुद्र झाग २ तोला पहले सीसा पारेकी कजली करै फिर सब चीजोंको मिलाकर चार दिनतक खरल करै फिर इसमें कपूर २ तोला मिलावै सुरमा बनगया सुबह शाम लगानेसे आँखोंको बहुत फायदा होताहै रोसनी आँखोंकी बढती है कपूर भीमसेनी पडताहै जो ऊपर लिखाहै ।

अथ सलाई सीसेकी आँखमें लगानेकी नं० १८२.

सीसा लेकर एकसेर ५१ त्रिफलेके काढेमें सो १०० बार बुझावै फिर भाँगरेके रसमें पचास ५० बार बुझावै फिर सोंठके काढेमें पचास ५० बार बुझावै फिर धीमें पचास ५० बार बुझावै फिर गोमूत्रमें पचीस

२५ बार बुझावै फिर सहतमें २५ बार बुझावै फिर दूधमें पचीस २५ बार बुझावै इस भाँति सीसेको ३२५ बार बुझावै उस सीसेकी सलाई बनवाले उस सलाईको दिनोंरातमें चार दफे खाली आँखमें फेरै आँखसे पानी आताहो वो बंद हो जावैगा और कभी आँख दुखैगी नहीं और आदमीके बुढ़ापे तक रोसनी आँखकी वैसेही रहेगी कम न होगी और जिसको कम दिखाता हो सलाई फेरनेसे आँखकी रोसनी ठीक हो जायगी ।

अथ लौकसपिस्ता बनानेकी विधि नं १८३.

१ लसौंडे	अदद ५०	४ तुरुमखतमी	तोला १
२ उन्नाव	अदर २०	५ पोस्तकाछिकला	तोला २
३ मुरैठी	तोला १	६ बिहीदाना	मासे ६

इन सबका काढा करके बूरा आधसेर साँकी चासनी करके सब दवाका काढा चासनीमें डालकर पकावे फिर उपरसे इतनी दवा पीसकर और डालदे जो नीचे लिखी हैं ।

१ वादामगिरी	तोला १	४ कतीरा	मासे ६
२ पोस्तदाना	तोला १	५ गोंद	मासे ६
३ जी तोला	तोला १	६ मुरैठी	मासे ६

यह लौकसपिस्ता खाँसीको बहुत फायदा करता है ।

अथ आसवद्राक्षादि दूसरा नं० १८४.

१ मुनका	पल ५०	१५ बबूरकी छाल	पल १६
२ किसमिस	पल १००	१६ महुआकी छाल	पल ८
३ छुहारे	पल २५	१७ आमकी छाल	पल ८
४ बादाम	पल २५	१८ जामुनकी छाल	पल ८
५ गोला	पल १२	१९ सरैटीकी छाल	पल ८
६ गिलोय	पल ४	२० कँधीकी छाल	पल ८
७ गोखरू	पल ४	२१ नलकी जड़	पल ८
८ सतावर	पल ४	२२ डामिकी जड़	पल ८
९ काँचकेबीज	पल ४	२३ गन्नेकी जड़	पल ८
१० मूसली	पल ४	२४ गोंदनीकी छाल	पल ८
११ मूसलीस्याह	पल ४	२५ धायके फूल	पल ३२
१२ तालमखाना	पल ४	२६ बूरा सपेद सेर	५१
१३ बीजवन्द	पल ४	२७ गुड	सेर ५५
१४ बेरीकी छाल	पल ४		

इन सब चीजोंको कूटकर एक मट्टकामें भर दे और इतनी चीजोंका घूसण करके मट्टकामें डारे जो नीचे लिखी हैं ।

१ त्रिकुटा	पल ३	४ इलायची सपेद	पल १
२ त्रिफला	पल ३	५ तज	पल १
३ पत्रज	पल १	६ इलायची लाल	पल १

७ चीता	पल १	१४ अगर	पल १
८ धनियां	पल १	१५ तगर	पल १
९ चोत्रा चीनी	पल १	१६ जावित्री	पल १
१० मुरैठी	पल १	१७ जायफल	पल १
११ पाषाणभेद	पल १	१८ लौंग	पल १
१२ चन्दन सपेद	पल १	१९ खस	पल १
१३ चन्दन लाल	पल १	२० बालछड	पल १

इन सब दवाओंके तोलसे छै गुणा पानी मटुकामें भरै फिर मटुकेको एक महीना जमीनमें घोड़ेकी लीदमें गाड़ै फिर मटुकेको निकाल कर भवकेमें उसका अर्क खींच लेय और इतनी चीजोंकी पोटली भवकेमें डाल दे नीचे लिखी ।

१ केसर	मासे १६	३ कस्तूरी	मासे ४
२ कपूर	" ८	४ धनियां	" १६

खुराक १ तोलेसे ४ तोलेतक सुबह दुपहर शाम तीनवख्त पीवै काम अधिक बढै बंधेज होय मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात प्रमेह दूर होय कास स्वास यक्ष्म । दूर होय वीर्यकी वृद्धि होय अरुचि दूर होय क्षुधाकरै पांडुरोग दूर होय सर्व उदररोग दूर होय और खांसी जिसमें कफ आताहो और स्वांस भी हो उसको बहुत फायदा करता है ।

अथ हुचकीकी दवा नं १८५.

— सैधानोनको पानीमें घिसकर नास दे पानी नाकके रास्ते सुँघावे हुचकी वन्द होजावेगी ।

अथ नारायणी तैल नं० १८६.

असगन्ध पल १० खरैटीकी छाल पल १० वेलकी छाल पल १० पादर पल १० कटेरी पल १० वनभटा पल १० गोखरू पल १० कंधीकी छाल पल १० नीमकी छाल पल १० अरलूकी छाल पल १० पुनरनवा पल १० पसारणी पल १० अरनीकी छाल १० इन सब चीजों से आठ गुण जल डारे और सबका काढा करे जब चौथाई पानी बाकी रहै तब उतारले और काढेको छानले और सतावर पल ६४ का रस डाले जो रस नहीं निकले तो आठ गुणा पानी डार कर सतावरका काढा करके डारे और तेल तिलीका पल ६४ डारे और इन सब चीजोंको चूरण करके डारे जो नीचे लिखीहैं बच पल १ चन्दन पल १ कूट पल १ बालछड पल १ इलायची लाल पल १ छारछबीला पल १ सेंधा पल १ असगंध पल १ खरैटी पल १ रासन पल १ सौंफ पल १ देवदार पल १ सालपरणी पल १ तगर पल १ पृष्ठपरणी पल १ माषपरणी पल १ मुद्गरपरणी पल १ इनको महीन कूट पीसकर डारे और दूधगायका सोलासेर १५६

डारै काढे और तेल और चूरण और दूध सबको कढा-
ईमें डारकर आगपर चढादे मंद मंद आँचसे तेल पका
ले फिर तेलको छानकर बोटलमें भरले जिसमें लगावें
तो वात विकार सर्व जाँय पक्षाघात जाय संधि संधिकी
पीडा जाय क्षीण पुरुष पुष्ट होय स्त्री प्रसूति जाय वाँझ
स्त्री पुत्रवती होय ।

अथ लोहा आसव नं० १८७.

लोहा चूरण पल ४ त्रिकुटा पल १२ त्रिफला पल
१२ अजवायन पल ४ चीता पल ४ वायविडंग पल ४
नगरमोथा पल ४ सहत पल ६४ गुड पुराना पल सौ
१०० सब दवाइयोंको चूरण करके बीस सेर ॥५ पानीमें
सब डारदे एक महीना १ दस दिन १० जमीनमें
गढा खोदकर घोडेकी लीद भरकर उसमें मटका गाडदे
फिर मटकेको निकाल कर अर्कको छानले प्रातःसमय १
पल पीवें तो अग्नि तीव्रकरे पाँडु सोथ गुल्म प्लीहा
स्वाँस कास भगंदर अरुचि संग्रहणी इन सब रोगोंको
दूर करता है ।

अथ अर्कवेलनं १८८.

वेल कच्चेका गूदा निकालकर काढा करके अर्क भेंवके
में खेंचले तथा वेल पक्केका काढा करनेकी जरूरत नहीं
है गूदेको पानीमें घोलकर उसका अर्क खेंच ले यह
अर्क पेचिसके दस्तोंको बहुत फाहदा करता है सुराक
१ तोलेसे ३ तोले तक ।

(१२८) . ० खूबचन्दचिकित्सा ।

७ फिटकरी सपेदका	१० समुन्दरफेन तोला ६
फूला तोला ६	११ मूजकी राख तोला ६
८ नौसादर तोला ६	१२ सुरमा तोला ६
९ सोरा तोला ६	

सुरमाको अलहदा खूब महीन पीसले और सोराको अलहदा खूब महीन पीसले और सब दवाईको अलहदा पीसकर कपडछान करके उसमें सुरमा और सोरा मिलाकर फिर सबको खूब महीन सुरमाकी तरह पीसकर रखले रातको सलाईसे लगावै जाला व धुंध व फूलीको बहुत फायदा होगा ।

अथ वच्चोंकी संग्रहणी तथा बुखारकी दवाई नं० १९२.

१ हलदी	मासे ६	४ गजपीपल	मासे ६
२ देवदारु	मासे ६	५ पृष्ठपर्णी	मासे ६
३ कटैया	मासे ६	६ साँफ	मासे ६

सब पत्राको कूटछानकर थोड़ेसे पानीमें पीसकर उड़द चरावर गोली बनाले १ गोली शामको १ गोली सबेरेको सहतमें खिलावे बहुत फायदा होगा ।

इति खूबचन्दचिकित्सा समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

प्रेमराज श्रीकृष्णदास }
 "श्रीगुरुदेव" मंदिर प्रेम-मुखा. }

लाजा खूबचन्द
 श्रीगोपीन
 य० पी०